

वर्ष: 17 | अंक : 5 | मई 2026 | मूल्य: ₹ 10 /=-

हंसलोक संदेश



गंगा दशहरा की हार्दिक शुभकामनाएं!

भारतीय संस्कृति, अध्यात्म व सामाजिक एकता की प्रतीक हिंदी मासिक पत्रिका



हंसलोक संदेश

भारतीय संस्कृति, आध्यात्मिक ज्ञान व सामाजिक एकता की प्रतीक

वर्ष-17, अंक-5
मई, 2026
वैशाख-ज्येष्ठ, 2083 वि.स.
प्रकाशन की तारीख
प्रत्येक माह की 5 व 6 तारीख

मुद्रक एवं प्रकाशक-

श्री हंसलोक जनकल्याण समिति (रजि.)
श्री हंसलोक आश्रम, बी-18, (खसरा नं. 947),
छतरपुर-भाटी माइंस रोड, भाटी, महारौली,
नई दिल्ली-110074 के लिए मंगल द्वारा
एमिनेंट ऑफसेट, डी-94, ओखला इण्डस्ट्रियल
एरिया, फेस-1, नई दिल्ली-110020
से मुद्रित करवाकर प्रकाशित किया।

सम्पादक- राकेश सिंह

मूल्य-एक प्रति-रु.10/-

पत्राचार व पत्रिका मंगाने का पता:

कार्यालय: हंसलोक संदेश

श्री हंसलोक जनकल्याण समिति,
B-18, भाटी माइंस रोड, भाटी,
छतरपुर, नई दिल्ली-110074

मो. नं. : 8800291788, 8800291288

Email: hansloksandesh@gmail.com

Website: www.hanslok.org

Subject to Delhi Jurisdiction

RNI No. DELHIN/2010/32010

संपादकीय

सहज और संतुलित जीवन की सीख

प्रकृति स्वयं में एक मौन गुरु है, जो बिना शब्दों के मनुष्य को शांति, संतुलन और सहअस्तित्व की शिक्षा देती है। उसके हर नियम में जीवन के लिए गहरा संदेश निहित है। प्रकृति न तो हड़बड़ी करती है, न ही किसी से प्रतिस्पर्धा, फिर भी उसका प्रत्येक कार्य पूर्णता और नियमितता के साथ संपन्न होता है। यही उसकी सबसे बड़ी सीख है। प्रकृति का पहला नियम है- संतुलन। दिन और रात, गर्मी और सर्दी, वर्षा और सूखा- सब एक निश्चित अनुपात में आते हैं। यदि यह संतुलन बिगड़ जाए, तो जीवन संकट में पड़ जाता है। मनुष्य के जीवन में भी जब इच्छाएं, भावनाएं और व्यवहार संतुलन में रहते हैं, तभी मानसिक शांति संभव होती है। अति हर स्थिति में अशांति को जन्म देती है। प्रकृति हमें यह सीख बार-बार देती है। प्रकृति का दूसरा नियम है- स्वीकार्यता। नदी चट्टानों से टकराती है, फिर भी रुकती नहीं, वह मार्ग बदल लेती है। वृक्ष आंधी में झुक जाते हैं, टूटते नहीं। जो व्यक्ति जीवन की परिस्थितियों को स्वीकार कर लेता है, उसके भीतर तनाव और असंतोष अपने आप कम हो जाता है।

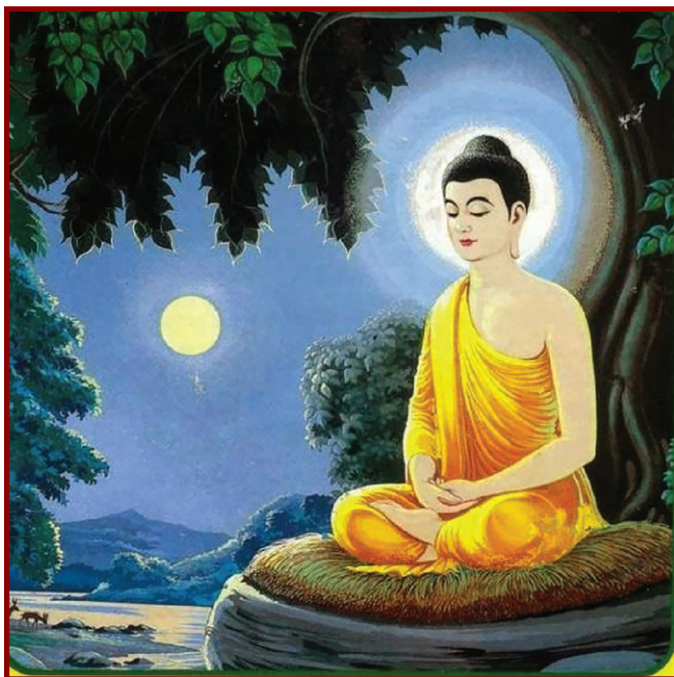
प्रकृति का तीसरा नियम है- मौन और धैर्य। बीज धरती में चुपचाप पड़ा रहता है, समय आने पर ही अंकुरित होता है। फल पकने में समय लेता है, जबरदस्ती नहीं। यह हमें सिखाता है कि हर परिणाम का अपना समय है। अधैर्य और उतावलेपन से मन अशांत होता है, जबकि धैर्य आत्मिक शांति प्रदान करता है। जंगल में असंख्य जीव रहते हैं, फिर भी एक-दूसरे के लिए स्थान बना रहता है। जब मनुष्य भी प्रकृति के नियम को स्वीकार करता है, तभी संघर्ष कम होता है। प्रकृति यह सिखाती है कि शांति बाहर नहीं, भीतर से उपजती है। जैसे प्रकृति अपने नियमों का पालन करती है, वैसे ही यदि मनुष्य भी संयम, संतुलन और स्वीकार्यता को जीवन का आधार बना ले, तो व्यक्तिगत ही नहीं, सामाजिक शांति भी संभव है। प्रकृति का शांत प्रवाह हमें यही सिखाता है- सरल रहो, संतुलित रहो और सहज रहो। यही महात्मा बुद्ध का भी उपदेश था। सम्यक ज्ञान, सम्यक श्रम, सम्यक व्यवहार और सम्यक साधना। हमें अपने जीवन में इसी सम्यकता, सहजता, स्वीकार्यता और संतुलन को धारण करना होगा, तभी जीवन में शांति आएगी। यह सब सद्गुरु प्रदत्त अध्यात्म ज्ञान की साधना से ही संभव है। ■

करुणा, शांति और मानवता की संदेशवाहक है: बुद्ध पूर्णिमा

हमारे देश को प्राचीन काल से ही आध्यात्मिक चिंतन और जीवन-दर्शन की भूमि कहा जाता है। यहाँ समय-समय पर अनेक महान संतों, मनीषियों और महापुरुषों ने जन्म लेकर मानव समाज को सत्य, धर्म और नैतिकता का मार्ग दिखाया है। इन महापुरुषों में भगवान गौतम बुद्ध का नाम अत्यंत श्रद्धा और सम्मान के साथ लिया जाता है। उन्होंने अपने जीवन्त-चिंतन और उपदेशों के माध्यम से मानव जीवन के दुःखों का गहन अध्ययन किया और उनसे मुक्ति पाने का सरल तथा व्यावहारिक मार्ग प्रस्तुत किया।

भगवान बुद्ध का जन्म दिवस बुद्ध जयंती के रूप में मनाया जाता है। यह पर्व प्रत्येक वर्ष वैशाख मास की पूर्णिमा के दिन मनाया जाता है। इस दिन को बुद्ध पूर्णिमा भी कहा जाता है। बौद्धमत की परंपरा के अनुसार यह दिन अत्यंत पवित्र माना जाता है; क्योंकि इसी दिन भगवान बुद्ध का जन्म हुआ, इसी दिन उन्हें ज्ञान प्राप्त हुआ और इसी दिन उन्होंने महापरिनिर्वाण प्राप्त किया।

बुद्ध जयंती केवल एक धार्मिक पर्व नहीं है, बल्कि यह मानवता, करुणा और नैतिकता का उत्सव है। यह दिन हमें स्मरण कराता है कि मनुष्य का जीवन केवल भौतिक सुखों के लिए नहीं है, बल्कि सत्य, शांति और आत्मज्ञान की प्राप्ति के लिए भी है। आज के युग में जब संसार अनेक प्रकार की समस्याओं, संघर्षों और हिंसा से जूझ रहा है, तब भगवान बुद्ध का संदेश पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण हो गया है। उनका जीवन चरित और उनका जीवन-दर्शन हमें यह सिखाता है कि सच्ची शांति बाहरी परिस्थितियों से नहीं, बल्कि मन की शुद्धता और करुणा से प्राप्त होती है। भगवान बुद्ध के जन्म से



बुद्ध जयन्ती, 1 मई पर विशेष

पहले भारत की सामाजिक और धार्मिक स्थिति अत्यंत जटिल हो चुकी थी। उस समय समाज में अनेक प्रकार की कुरीतियाँ और अंधविश्वास प्रचलित थे। जाति-व्यवस्था अत्यधिक कठोर हो गई थी और समाज में ऊँच-नीच का भेदभाव बढ़ गया था। धार्मिक कर्मकांडों का अत्यधिक प्रभाव था। यज्ञ और अनुष्ठानों में पशुबलि दी जाती थी, जिससे समाज में हिंसा और असमानता की भावना बढ़ती जा रही थी। सामान्य जनता इन जटिल धार्मिक प्रक्रियाओं को समझने में असमर्थ थी। ऐसी परिस्थिति में समाज को एक ऐसे मार्गदर्शक की आवश्यकता थी, जो धर्म को सरल और व्यावहारिक रूप में प्रस्तुत करे तथा मानव जीवन को नैतिकता और करुणा के आधार पर पुनः स्थापित करे। भगवान बुद्ध ने यही कार्य किया। उन्होंने धर्म को कर्मकांडों से मुक्त करके मानव जीवन की वास्तविक समस्याओं के समाधान पर ध्यान केंद्रित

किया। उनके विचारों ने समाज में एक नई जागृति उत्पन्न की और लोगों को आत्मचिंतन के लिए प्रेरित किया। भगवान गौतम बुद्ध का जन्म लगभग 563 ईसा पूर्व में लुंबिनी नामक स्थान पर हुआ था, जो वर्तमान में नेपाल में स्थित है। उनके पिता राजा शुद्धोधन शाक्य गणराज्य के शासक थे और उनकी माता महारानी माया देवी थीं। बौद्ध परंपराओं और पौराणिक कथाओं के अनुसार बुद्ध के जन्म से पहले महारानी माया देवी ने एक अद्भुत स्वप्न देखा। उन्होंने देखा कि एक श्वेत हाथी उनके गर्भ में प्रवेश कर रहा है। विद्वानों और ज्योतिषियों ने इस स्वप्न की व्याख्या करते हुए कहा कि उनके गर्भ से एक महान आत्मा जन्म लेने वाली है, जो आगे चलकर संसार को

आध्यात्मिक ज्ञान का मार्ग दिखाएगी। कहा जाता है कि जब उनका जन्म हुआ, तब प्रकृति में एक अद्भुत शांति और आनंद का वातावरण था। बौद्ध ग्रंथों में वर्णन मिलता है कि उनके जन्म के समय देवताओं ने प्रसन्न होकर पुष्प-वर्षा की थी। बालक का नाम सिद्धार्थ रखा गया, जिसका अर्थ है- “जिसका उद्देश्य सिद्ध होने वाला हो।” सिद्धार्थ के जन्म के कुछ समय बाद महान ऋषि असित राजमहल में पधारे। उन्होंने बालक सिद्धार्थ को देखकर अत्यंत प्रसन्नता व्यक्त की और उनके भविष्य के बारे में एक महत्वपूर्ण भविष्यवाणी की। उन्होंने कहा कि यह बालक असाधारण प्रतिभा और आध्यात्मिक शक्ति से युक्त है। यदि यह राजसी जीवन में रहेगा, तो एक महान सम्राट बनेगा; किंतु, यदि यह संसार के दुःखों को देखेगा, तो यह निश्चित रूप से एक महान संत बनेगा और मानवता को ज्ञान का मार्ग दिखाएगा। इस भविष्यवाणी से राजा शुद्धोधन चिंतित हो गए। वे चाहते थे कि उनका पुत्र एक महान राजा बने। इसलिए उन्होंने यह निश्चय किया कि सिद्धार्थ को संसार के दुःखों से दूर रखा जाए। सिद्धार्थ का बाल्यकाल अत्यंत सुख और वैभव में बीता। राजमहल में उन्हें सभी प्रकार की सुविधाएं उपलब्ध थीं। उन्हें उत्तम शिक्षा दी गई और युद्धकला, राजनीति, साहित्य तथा दर्शन का भी ज्ञान कराया गया। सिद्धार्थ अत्यंत बुद्धिमान, दयालु और शांत स्वभाव के थे। बचपन से ही उनके मन में करुणा और संवेदनशीलता की भावना प्रबल थी। वे अक्सर दूसरों के दुःख को देखकर व्यथित हो जाते थे। युवावस्था में उनका विवाह यशोधरा नामक राजकुमारी से हुआ। कुछ समय बाद उनके पुत्र राहुल का जन्म हुआ। यद्यपि उनके पास सभी प्रकार के सुख-साधन थे, फिर भी उनके मन में जीवन के गहरे प्रश्न उठते रहते थे। एक दिन सिद्धार्थ ने नगर भ्रमण करने की इच्छा व्यक्त की। जब वे नगर में निकले तो उन्होंने चार ऐसे दृश्य देखे, जिन्होंने उनके जीवन की दिशा बदल दी।

उन्होंने नगर भ्रमण के दौरान एक वृद्ध व्यक्ति, एक रोगी, एक मृत व्यक्ति का शव और एक संन्यासी को देखा। इन दृश्यों को देखकर उन्हें यह ज्ञात हुआ कि संसार में हर व्यक्ति को बुढ़ापा, बीमारी और मृत्यु का सामना करना पड़ता है। यह सत्य उनके मन को अत्यंत व्याकुल करने लगा। संन्यासी को देखकर उनके मन में यह विचार उत्पन्न हुआ कि शायद त्याग और साधना के माध्यम से जीवन के दुःखों का समाधान खोजा जा सकता है। लगभग 29 वर्ष की आयु में सिद्धार्थ ने राजमहल, परिवार और सभी सांसारिक

सुखों का त्याग कर दिया। इस घटना को **महाभिनिष्क्रमण “महान त्याग”** कहा जाता है। उन्होंने सत्य की खोज के लिए वन और आश्रमों में जाकर अनेक गुरुओं से शिक्षा प्राप्त की और कठोर तपस्या की। कई वर्षों तक उन्होंने अत्यंत कठिन साधना की। लेकिन, अंततः उन्हें यह अनुभव हुआ कि अत्यधिक तपस्या से भी सत्य की प्राप्ति संभव नहीं है। सिद्धार्थ ने यह समझा कि जीवन में अत्यधिक भोग और अत्यधिक तपस्या दोनों ही मार्ग उचित नहीं हैं। इसलिए उन्होंने मध्यम मार्ग को अपनाने का निर्णय लिया। वे बोधगया पहुँचे और एक पीपल के वृक्ष के नीचे गहन ध्यान में बैठ गए। उन्होंने निश्चय किया कि जब तक उन्हें सत्य का ज्ञान प्राप्त नहीं होगा, तब तक वे वहाँ से नहीं उठेंगे। अंततः सुजाता नाम की कन्या के सदुपदेश के पश्चात वे गहन ध्यान और आत्मचिंतन के बाद उन्हें बोधिसत्व की प्राप्ति हुई और वे गौतम बुद्ध कहलाए।

ज्ञान प्राप्ति के बाद बुद्ध ने मानव समाज को सत्य और धर्म का मार्ग दिखाना प्रारंभ किया। उन्होंने अपना पहला उपदेश सारनाथ में दिया। बुद्ध ने जीवन के दुःखों को समझाने के लिए चार आर्य सत्य बताए और दुःख से मुक्ति का मार्ग अष्टांगिक मार्ग के रूप में प्रस्तुत किया। उनके उपदेशों का मुख्य आधार था- अहिंसा, करुणा, सत्य और आत्मसंयम। भगवान बुद्ध के विचारों का प्रभाव केवल भारत तक सीमित नहीं रहा। उनके उपदेश एशिया के अनेक देशों जैसे श्रीलंका, चीन, जापान, थाईलैंड, म्यांमार और तिब्बत तक फैल गए। सम्राट अशोक ने बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने बौद्ध धर्म के सिद्धांतों को अपनाकर उन्हें पूरे एशिया में फैलाया। बुद्ध जयंती बौद्ध धर्म का सबसे महत्वपूर्ण पर्व है। इस दिन मंदिरों में विशेष पूजा-अर्चना की जाती है। लोग भगवान बुद्ध की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित करते हैं, दीप जलाते हैं और उनके उपदेशों का पाठ करते हैं। दान, सेवा और करुणा के कार्यों को इस दिन विशेष महत्व दिया जाता है।

आज का विश्व हिंसा, युद्ध, आतंकवाद और सामाजिक असमानता जैसी समस्याओं से घिरा हुआ है। ऐसे समय में भगवान बुद्ध के विचार मानवता के लिए एक मार्गदर्शक प्रकाश की तरह हैं। यदि मनुष्य बुद्ध के सिद्धांतों अहिंसा, करुणा, सहिष्णुता और सत्य को अपने जीवन में अपनाए, तो समाज में शांति और सद्भाव स्थापित हो सकता है। अतः बुद्ध पूर्णिमा केवल एक धार्मिक पर्व नहीं है, बल्कि यह मानवता के लिए एक प्रेरणा है, जो हमें सच्चे जीवन का मार्ग दिखाता है। ■

अब “श्री हंस जी” की ही आज्ञा में रहो

-स्वामी स्वरूपानंद जी महाराज

दादागुरु स्वामी स्वरूपानंद जी महाराज के कई शिष्य ऐसे थे, जिन्होंने उनके महाप्रयाण के पश्चात योगिराज श्री हंस जी महाराज का शिष्यत्व ग्रहण किया। ये वही शिष्य थे जो दादागुरु के अत्यधिक निकट और प्रिय थे। इन्हीं में से उनके एक प्रिय शिष्य थे हापुड़ उत्तर प्रदेश निवासी बाबू श्याम सुन्दर लाल। बाबू श्यामसुन्दर जी बाद में श्री हंस जी महाराज के भी निकटतम शिष्यों में रहे। ये ऐसे सौभाग्यशाली प्रेमी भक्त थे, जिन्हें योगिराज श्री हंस जी



महाराज के साथ-साथ स्वामी स्वरूपानंद जी महाराज के भी सगुण साकार स्वरूप के साक्षात् दर्शन हुए थे। बाबू श्यामसुन्दर लाल को प्रेमीभक्त बाबू जी कहकर बुलाते थे। वे अक्सर दादागुरु और श्री हंस जी महाराज के समय की अनेक लीलाओं एवं घटनाओं को प्रेमीभक्तों को सुनाया करते थे। बाबू जी ने एक बार प्रसंगवश श्री हंस जी महाराज से संबंधित संस्मरण सुनाते हुए बताया था कि मुझे स्वामी स्वरूपानंद जी के समय सन 1934-35 में श्री हंस जी महाराज से उपदेश हुआ था। तब बहुत कम लोग दिल्ली में शिष्य थे। एक बार दादागुरु सन 1936 में टेहरी आश्रम, (अब पाकिस्तान से) आनन्दपुर धाम मध्य प्रदेश होते हुए प्रेमीभक्तों को दर्शन देने के लिए दिल्ली पधारे। वे पुरानी दिल्ली की एक धर्मशाला में ठहरे हुए थे। उनके दिल्ली आगमन की सूचना पाकर प्रेमीभक्त उनके दर्शनों के लिए आए। मैं भी दर्शन और सत्संग की इच्छा से वहाँ पहुँचा हुआ

था। कुछ प्रेमीभक्त उनके दर्शनों की प्रतीक्षा में कमरे के बाहर बैठे हुए थे। मैं, एक प्रेमी के साथ दर्शन एवं प्रवचन देने की प्रार्थना लेकर उनके कमरे में गया। उस समय कमरे में श्री हंस जी महाराज सफेद धोती-कुर्ता एवं टोपी पहने स्वामी

स्वरूपानंद जी के पास ही बैठे थे। ज्योंही हम लोगों ने स्वामी स्वरूपानंद जी महाराज से दर्शन एवं प्रवचन के लिए प्रार्थना की, तो वे कहने लगे कि अरे! अब आप लोग “श्री हंस जी” का दर्शन करो और उनका ही सत्संग सुनो! मेरे बाद

हमारे रूहानी इलम “अध्यात्म ज्ञान” के उत्तराधिकारी ये ही होंगे। श्री महाराज जी को उन्होंने इशारे से आदेश दिया कि वे बाहर जाकर प्रेमीभक्तों को सत्संग सुनायें। श्री हंस जी महाराज बाहर आकर सत्संग सुनाने लगे। थोड़ी देर में स्वामी स्वरूपानंद जी भी दर्शन देने कमरे से बाहर आ गए। सभी प्रेमीभक्तों ने उनके दर्शन करके प्रवचन के लिए प्रार्थना की, तो पुनः उन्होंने कहा- अब आप “श्री हंस जी” का ही दर्शन करें और सत्संग सुनें। इन्हीं की आज्ञा में रहें। अब आप मेरा दर्शन नहीं कर पायेंगे; क्योंकि अब, मेरा शरीर बहुत थक चुका है।

थोड़ी देर बाद पुनः उन्होंने पूछा कि किसी प्रेमी की कोई इच्छा है, तो कहो। तब मैंने दादागुरु से प्रार्थना की कि महाराज जी! क्या आप, मेरी कुटिया को अपने श्री चरणों से पवित्र करने की कृपा करेंगे! तो उन्होंने कहा- क्या, मेरे लिए किसी गाड़ी का प्रबन्ध किया है? तब मैंने कहा, मालिक!

दिल्ली में या तो अंग्रेज अधिकारियों के पास कार होती है या एक पुरानी कार रायबहादुर गया प्रसाद के पास है। मैं तो तांगे का प्रबन्ध कर सकता हूँ; क्योंकि दिल्ली में अब तक तांगे या बग्घी का ही प्रबन्ध संभव है। उनकी आज्ञा हुई, तो मैं एक तांगा ले आया। दिल्ली से हापुड़ मेरे घर उन्हें जाना था। उनका शरीर काफी वृद्ध और कमजोर हो चुका था। आज्ञा पाकर हमलोग उनके साथ तांगे में बैठ गये। आगे स्वामी स्वरूपानंद जी महाराज बैठे और अपनी दाहिनी ओर उन्होंने श्री हंस जी महाराज को बैठने के लिए कहा तथा उनकी आज्ञा से मैं भी उनकी बाईं ओर बैठ गया। दो-तीन प्रेमी तांगे के पीछे बैठ गये। पक्की सड़क से तांगा दिल्ली से हापुड़ मेरे घर के सामने की गली तक पहुँच गया; लेकिन आगे कच्चा रास्ता था, जिसमें तांगा का घोड़ा जाने से अड़ गया। मैं परेशान था। तब स्वामी स्वरूपानंद जी ने कहा, अब क्या करोगे? भावावेश में मैंने अपने दोनों हाथ उनकी ओर बढ़ाये और वे मेरे कंधों पर बच्चों की तरह आ गये। वे लगभग सवा छः फीट लम्बे थे; लेकिन वे बिल्कुल हल्के हो गये। वहाँ उन्होंने हमारे घर पर विश्राम किया, भोग लगाया तथा उपस्थित प्रेमीभक्तों को सत्संग सुनाया। वहाँ से वे पुनः हम लोगों के साथ दिल्ली आ गये। दिल्ली से उन्हें नंगली, मेरठ के लिए जाना था। जाने से पहले भी उन्होंने वहाँ उपस्थित सभी प्रेमीभक्तों से कहा- “हम जा रहे हैं। हमारा चोला बहुत पुराना हो गया है। आप लोग “श्री हंस जी” की आज्ञा में रहना, इन्हीं का सत्संग सुनना और दर्शन करना।” नंगली जाकर उन्होंने अपना लौकिक चोला त्याग दिया। उसके बाद मैं उनकी आज्ञा के अनुसार श्री हंस जी महाराज को अपना गुरु मानकर उनकी आज्ञा में पूर्णतः समर्पित हो गया।

योगिराज श्री हंस जी महाराज बड़े ही निर्भीक और अद्भुत संत थे। वे संत कबीरदास जी की तरह स्पष्ट वक्ता थे। एक बार श्री महाराज जी के सत्संग कार्यक्रम में तीन राज्यपाल भी सत्संग सुनने के लिए पधारे। उनमें दो दक्षिणी भारत के प्रांतों के राज्यपाल थे; परन्तु श्री के.एम. मुंशी उत्तर प्रदेश के राज्यपाल थे। उस सत्संग कार्यक्रम में श्री महाराज जी की इच्छानुसार सत्संग मंच से तीनों ही राज्यपालों को बोलने का अवसर दिया गया; लेकिन उन तीनों ने अंग्रेजी भाषा में अपने व्याख्यान दिए। जब श्री महाराज जी ने सत्संग सभा को सम्बोधित किया, तो उन्होंने अपने सत्संग-प्रवचन में बड़ी स्पष्टता और निर्भीकता के साथ कहा कि तीनों

महामहिम राज्यपाल महोदयों ने आपको अंग्रेजी में अपने भाषण सुनाये। श्री महाराज जी ने श्रोताओं से प्रश्न करते हुए पूछा कि आपको कुछ समझ में आया? सभी श्रोताओं ने नहीं में सिर हिलाया। तो श्री महाराज जी ने कहा कि ये तीनों ही महामहिम हजारों श्रोताओं के बीच में अंग्रेजी में भाषण दे रहे थे, क्या ये तीनों आपको सुना रहे थे या आपस में ही एक-दूसरे को सुना रहे थे। फिर श्री महाराज जी ने उत्तर प्रदेश के राज्यपाल महादेय श्री के.एम. मुंशी की ओर उन्मुख होते हुए कहा- महोदय, आप तो हिन्दी भाषी प्रान्त, उत्तर प्रदेश के राज्यपाल हैं। कम-से-कम आपको तो हिन्दी भाषा में सुनाना चाहिए था, जिससे इन श्रोताओं को कुछ समझ में आता कि आप इनसे क्या कहना चाहते थे। वे सभी इस बात से अपने आपको बड़ा ही शर्मिंदा महसूस कर रहे थे और उन्होंने श्री महाराज जी की बात को सही माना कि वक्ता को हमेशा श्रोताओं की भाषा में ही वक्तव्य देना चाहिए।

श्री के.एम. मुंशी की श्री हंस जी महाराज में बड़ी श्रद्धा थी। सरिता नाम की मासिक पत्रिका में उन्होंने अपने व्यक्तिगत जीवन के अनुभवों के बारे में एक संस्मरण लिखा; जिसमें उन्होंने लिखा कि यों तो जीवन में, मुझे अनेक गुरुओं, योगाचार्यों, चमत्कारी योगियों एवं सन्तों का सानिध्य प्राप्त हुआ है; लेकिन मेरे जीवन में योगिराज श्री हंस जी महाराज के आध्यात्मिक व्यक्तित्व ने अमिट छाप छोड़ी है। उनका व्यक्तित्व अलौकिक और अद्भुत था। उनमें एक अजीब सा आकर्षण था। मुझे तो क्षण-प्रतिक्षण उनके व्यक्तित्व और अलौकिक चेहरे में परिवर्तन होता हुआ प्रतीत होता था। वे कभी नवयुवक, कभी तेजस्वी युवक तो कभी वृद्ध प्रतीत होते थे। उनका चेहरा हमेशा अलौकिक आभा से युक्त रहता था। मुझे उनके सानिध्य में बड़ी शांति मिलती थी।

दादा गुरु स्वामी स्वरूपानंद जी महाराज के महाप्रयाण के पश्चात् उनके अनेक शिष्यों ने उनकी आज्ञानुसार योगिराज श्री हंस जी महाराज को अपना आध्यात्मिक गुरु माना और जीवनपर्यंत वे उनकी आज्ञा में रहकर उन्हीं के सत्संग, सेवा और दर्शन से लाभान्वित होते रहे तथा उनकी आज्ञा के अनुसार ज्ञान प्रचार में सेवा सहयोग करते रहे। इस प्रकार दादा गुरु के आदेशानुसार श्री महाराज जी ने अध्यात्म ज्ञान प्रचार में अपने आपको पूर्णतः समर्पित कर दिया। इस प्रकार धीरे-धीरे संपूर्ण देश में ज्ञान प्रचार बढ़ने लगा। ■

चहुँ जुग चहुँ श्रुति नाम प्रभाऊ

परमसंत सद्गुरुदेव श्री हंस जी महाराज

प्रेमी सज्जनों! भगवान नारायण तो अन्दर हृदय में हैं और हम बाहर ढूँढ़ रहे हैं। काल के हाथ में कमान है, न जाने कब पकड़कर ले जाये? इसलिए समय रहते हुए हृदय स्थित भगवान के सच्चे नाम को जानना चाहिए।

बड़े-बड़े चक्रवर्ती राजा भी हाथ पसार कर दुनिया से चले गये। किसी को भी इस धोखे में नहीं रहना चाहिए कि अभी तो बहुत समय है, भजन बाद में कर लेंगे। काल का कोई भरोसा नहीं कि वह किस समय और किस बहाने आ जाये। इसलिए अच्छे काम को जल्दी से करना चाहिए।

रामचरित मानस में लिखा है कि दुनियाँ में जितने पुण्य, तीर्थ, व्रत, यज्ञ और हवन आदि करते हैं, उसका फल तो अगले जन्म में मिलेगा, लेकिन सत्संग रूपी गंगा में नहाने का फल तत्काल मिलता है। कहा है कि-

मज्जन फल पेखिये तत्काल।

काक होहिं पिक बकउ मराला।

अगर तुम सत्संग रूपी गंगा में नहा चुके हो, तो फल मिल ही गया होगा और जो गंगा में नहीं नहाया, तो उसे नहा लेना चाहिए। नहाने का मतलब क्या है? हरिद्वार में चले गए, किनारे पर पहुँच गए, कपड़े भी उतार कर रख दिये। लेकिन जब तक सत्संग-गंगा में डुबकी नहीं लगायेंगे, तब तक नहाना तो नहीं होगा। मज्जन क्या होता है? उस सच्चे नाम को जानना और सच्ची भक्ति का ज्ञान हो जाना जिसमें दीपक, बत्ती, घी की जरूरत

नहीं है। जो मनुष्य भगवान के उस ज्ञान को, उस सच्ची भक्ति को, सच्चे नाम को जान लेता है, उसका स्वभाव बदल जाता है, वह कौवा स्वभाव से कोयल स्वभाव का बन जाता है। बगुले के आगे दूध और



पानी मिलाकर रखो, तो वह या तो दोनों को पी जायेगा या दोनों को छोड़ जायेगा, लेकिन हंस के अंदर ऐसी क्षमता होती है कि वह केवल दूध को पीयेगा और पानी को छोड़ देगा। जो सत्संग की गंगा में गोता लगाता है, तो उसकी वृत्ति हंस की जैसी हो जाती है। सभी धर्मशास्त्रों में भगवान के नाम की महिमा बतायी गई है। रामचरित मानस में संत तुलसीदास जी कहते हैं-

राम एक तापस तिय तारी।

नाम कोटि खल कुमति सुधारी॥

तो बताओ, वह नाम कौन-सा है?

राम ने तो एक तपस्वी नारी अहिल्या का उद्धार किया, लेकिन भगवान के नाम ने तो करोड़ों दुष्टों की मति को सुधार दिया। रामचरित मानस में कहा है-

नाम प्रभाउ जान गनराऊ।

प्रथम पूजियत नाम प्रभाऊ।

नाम के प्रभाव को गणेश जी ने जाना और उसके प्रभाव से सब देवताओं में सबसे पहले उनकी पूजा होने लगी। नाम का ऐसा प्रभाव है कि जहर भी उस पर असर नहीं करता। नाम का सुमिरण करके शिव जी ने कालकूट को पी लिया और वह उनके लिए अमृत हो गया। जिस भक्त के पास राम नाम की चिन्तामणि है, वह कभी गरीब नहीं रहता। वह सेठों का भी सेठ होता है। उसके बराबर दुनिया में कोई धनी नहीं होता। नाम की महिमा बताते हुए संत तुलसीदास जी कहते हैं-

नाम प्रसाद संभु अविनासी।

साजु अमंगल मंगल रासी॥

साँपों को गले में रखना, मुँडमाला पहनना। नाम के प्रभाव से इस अमंगल वेष में भी शिवजी मंगल के भंडार माने जाते हैं। भगवान राम ने भालुओं और बन्दरों की सेना इकट्ठी की, रामेश्वरम में पुल बनाया और तब समुद्र को पार किया। लेकिन यहाँ तो नाम लेते ही संसार सागर सूख जाता है, तो कौन बड़ा हुआ? तुम्हीं विचार विचार करो। भगवान के नाम को जान लेने से मंगल ही मंगल हो जायेगा और अमंगल जाता रहेगा।

उस नाम को यदि मनुष्य योनि में नहीं जाना, तो कब जानोगे? और जो कुछ तुम जानते हो, वह तो कुछ भी नहीं है। जैसे केले का जो पेड़ होता है, उसका छिलका उतारते चले जाओ, तो अन्त में कुछ नहीं रहता। वैसे ही दुनियाँ के लोगों में कहता हूँ कि जो कुछ भी पूजा-पाठ तीर्थ-व्रत, दान-पुण्य या माला फेरना जो कुछ भी करते हो, वह कुछ भी नहीं है, उससे कोई लाभ नहीं होता।

मैं हिन्दुओं को भी बताता हूँ, मुसलमानों को भी बताता हूँ, ईसाइयों को भी बताता हूँ, बौद्धों को भी बताता हूँ, जैनियों को भी बताता हूँ; क्योंकि भगवान का वह नाम तो सबके हृदय में है। सबके हृदय में होने से मैं पूछता हूँ कि बताओ, तुम उस नाम को कब जानोगे? जिसका वेद-शास्त्रों में वर्णन है, यह वही नाम है, यह वही भजन है। संत तुलसीदास जी कहते हैं-

**चहुँ जुग चहुँ श्रुति नाम प्रभाऊ।
कलि विसेष नहिं आन उपाऊ।**

चारों युगों में, चारों वेदों में जिसकी महिमा है, वह क्या चीज है? वह अविनाशी है, जिस नाम को लेने से संसार सागर ही सूख जाता है। जो पहले सत्संग सुनेगा और फिर उसके बारे में पूछेगा, तो उसको हम बताते हैं। हमने लाखों, करोड़ों आदमियों को उस नाम के बारे में बताया है। हम सब जगह उस नाम की चर्चा करते हैं और जो जानना चाहते हैं, उनको बताते भी हैं। अभी मैं मुम्बई गया था। मुम्बई में बड़ा भारी जलसा हुआ। तुम्हारे यू.पी. और महाराष्ट्र के गर्वनर भी पहुँचे। हमने सब मिनिस्टर्स को और बड़े-बड़े लोगों को निमंत्रण भेजा था, लेकिन वे नहीं आये। कहते हैं कि जब दारुण दुःख पाने का

समय होता है, तो पहले ही मनुष्य की बुद्धि उल्टी हो जाती है। अगर कहीं टी-पार्टी हो तो सभी जायेंगे और इलेक्शन का टाइम हुआ तो घर-घर जायेंगे।

मनुष्य ने खाने और कमाने में अपना सारा जन्म गंवा दिया और धन कमाया, तो वह भी यहीं रह गया। कितने भी दिन जिया, तो क्या हुआ? मैला बनाने की मशीन ही तो रहा। हे काया गढ़ यानि शरीर में रहने वाले जीवात्मा! चेत जाओ, उठो और भगवान की भक्ति में लगे। भगवान् श्रीकृष्ण गीता अध्याय 5 श्लोक 9 में कहते हैं- **तस्मात्सर्वेषु कालेषु मामनुस्मर युद्ध च। सदैव, हर**

मैं हिन्दुओं को भी बताता हूँ, मुसलमानों को भी बताता हूँ, ईसाइयों को भी बताता हूँ, बौद्धों को भी बताता हूँ, जैनियों को भी बताता हूँ; क्योंकि भगवान का वह नाम तो सबके हृदय में है। सबके हृदय में होने से मैं पूछता हूँ कि बताओ, तुम उस नाम को कब जानोगे? जिसका वेद-शास्त्रों में वर्णन है, यह वही नाम है, यह वही भजन है।

समय सुमिरण भी करो और लड़ाई भी करो। या तो कहो कि गीता गलत है और अगर गलत नहीं, उसे सही समझते हो, तो सुमिरण को जानो। गीता अध्याय 6 श्लोक 2 में भगवान अर्जुन से कहते हैं-

**इदंतु ते गुह्यतमं प्रवक्ष्याम्यनुसूयवे।
ज्ञानं विज्ञानसहितं यज्ज्ञात्वा
मोक्ष्यसे अशुभात्॥**

हे अर्जुन! मैं तुझे एक ऐसी बात बताता हूँ, जिसे केवल जानने मात्र से तू सब बुराइयों से बच जायेगा, लेकिन वह मैं तुझे इसलिए बताता हूँ कि तू दोष दृष्टि रहित है। तू किसी के अवगुणों को नहीं

देखता। शास्त्र में लिखा है-

**जड़ चेतन गुण दोष मय,
विस्व कीन्ह करतार।
संत हंस गुन गहहिं पय,
परिहरि वारि विकार॥**

देवताओं ने अमृतपान किया, जहर नहीं पिया। गुलाब के पेड़ में कांटे भी भगवान ने बनाये और फूल भी बनाये। जो अच्छे लोग होते हैं, वे हाथ बचाकर फूल ले लेते हैं और कांटे छोड़ देते हैं। भगवान श्रीकृष्ण थे, उन्होंने अर्जुन के अंदर एक भी अवगुण नहीं देखा। दूसरी ओर शिशुपाल था, उसने भगवान श्रीकृष्ण के अंदर 101 अवगुण गिनाये। भगवान

श्रीकृष्ण ने 100 अवगुण तक तो शिशुपाल को माफ कर दिया, लेकिन जैसे ही वह भगवान के 101 अवगुण पर पहुंचा, तो भगवान श्रीकृष्ण ने उसका सिर काट दिया।

तीन तरह के आदमी होते हैं। छलनी जैसे स्वभाव के आदमी, जो केवल दूसरों के अवगुण ही देखते हैं, गुणों को छोड़ देते हैं। जैसे छलनी आटा तो नीचे गिरा देती है और भूसी आदि अपने अन्दर रख लेती है। दूसरे ओखली जैसे स्वभाव के होते हैं, जिसके अन्दर चावल और भूसी दोनों रहते हैं, उनको वह अलग-अलग नहीं कर सकती और तीसरे सूप जैसे स्वभाव के होते हैं, जो केवल दूसरों के गुणों को ही ग्रहण करते हैं, अवगुणों की ओर ध्यान नहीं देते। जैसे सूप भूसी वगैरह को अलग कर देता है और चावल अपने पास रख लेता है। तो जो सूप जैसे स्वभाव के आदमी होते हैं, वे दूसरे के अवगुणों को नहीं देखते, वे केवल उसके गुणों को ग्रहण करने वाले होते हैं। जो दूसरे के अवगुणों को नहीं देखते, ऐसे ही लोगों को यह ज्ञान बताया जाता है।

नाम न जाने गाँव का, पहुँचेगा केहि ठौर

श्री भोले जी महाराज

प्रेमी सज्जनों! संत कबीरदास जी कहते हैं-

चलन चलन सब कोई कहे,
मोहे अन्देशा और।
नाम न जाने गाँव का,
पहुँचेगा केहि ठौर॥

हमें पता नहीं कि कहां जाना है, जबकि हमारा असली मुकाम भगवद् धाम ही है। मनुष्य जीवन उसी का सार्थक है, जिसने अपने मुकाम का पता लगा लिया हो।

जब हम सफर में जाते हैं, तो साथ में बहुत-सा सामान लेकर जाते हैं और टिकट लेकर रेल में सफर करते हैं। मतलब एक छोटी-सी यात्रा के लिये हम क्या नहीं करते, पर संसार से

जब हम महायात्रा पर जायेंगे, तो उसके लिये हमने क्या-क्या तैयारी की है, इस पर कभी विचार नहीं करते? कहा है-

आये हैं सो जायेंगे,
राजा रंक फकीर।
एक सिंहासन चढ़ चला,
एक बंधा जाये जंजीर॥

राजा हो, चाहे रंक हो, सबको इस संसार से एक दिन अवश्य जाना है।

भगवान बुद्ध के पास सब कुछ था, लेकिन जब उनको पता चला कि मुझे भी एक दिन वृद्ध बनना है, मुझे भी एक दिन बीमार होना है, मुझे भी एक दिन संसार से जाना है, तो वह सच्चे ज्ञान की तलाश में निकल पड़े। उनके मन में तो केवल एक ही जिज्ञासा थी कि मैं उस

सत्य को जानूँ। उन्होंने सत्य की खोज की। एक जगह घोर तपस्या में बैठ गये। तपस्या में इतने लीन हो गये कि खाने-पीने की सुध तक नहीं रही और वे बड़े कमजोर हो गये। एक दिन महान नारी सुजाता वहां से गुजर रही थी, उसकी दृष्टि बुद्ध पर पड़ी। सुजाता ने बुद्ध को समझाया कि वीणा के तार को इतना



भी न कसो कि तार ही टूट जाये और तार को इतना ढीला भी मत छोड़ो कि उसमें से सुर ही न निकले। सुजाता ने उनको ज्ञान देकर मध्यम मार्ग पर चलने की सलाह दी। सुजाता की बात बुद्ध की समझ में आ गई। उन्होंने ज्ञान प्राप्त कर मध्यम मार्ग को अपनाया। वास्तव में हठ से ज्ञान नहीं मिलता है। ज्ञान को पाने के लिए सद्गुरु की शरण में जाना पड़ता है। बुद्ध ने सच्चा ज्ञान प्राप्त किया और आज अनेक देशों में भगवान बुद्ध का प्रचार है।

इस प्रकार हमें भी सच्चे ज्ञान को जानना चाहिये। मनुष्य शरीर में ही उस ज्ञान को जान सकते हैं, बाकी योनियों में उसे जानना संभव नहीं। गुरु

नानकदेव जी कहते हैं कि-

ज्ञान अंजन सद्गुरु दिया,
अज्ञान अंधेर विनाश।
हरि कृपा ते संत भेंटियां,
नानक मन प्रकाश॥

हमारे अन्दर प्रकाश है, उसका बोध सच्चे सद्गुरु ही कराते हैं। हम भौतिक शिक्षा प्राप्त करने के लिये स्कूल में जाते हैं। अध्ययन के लिये हमें कितना कुछ करना पड़ता है। फीस जमा करानी पड़ती है, वर्दी सिलवानी पड़ती है। यदि स्कूल की फीस समय पर नहीं देंगे, तो स्कूल से मास्टर निकाल देगा। भौतिक शिक्षा के लिए तो लोग सब कुछ करते हैं, पर प्रभु के ज्ञान के बारे में सोचते नहीं, जबकि यही सही शिक्षा है। इसी ज्ञान से

मानव का कलुषित हृदय बदलेगा, उसके विचार पवित्र होंगे। उसी ज्ञान से परिवार, समाज और देश में सद्विचार फैलते चले जायेंगे। मानव-मानव के बीच भाईचारा बढ़ेगा।

बड़े-बड़े राजा-महाराजा हमारे देश में हुए, लेकिन एक दिन उन सबको भी इस संसार को छोड़कर जाना पड़ा, वे अपने साथ कुछ भी नहीं ले जा सके। इसलिए हमें सद्गुरु महाराज की खोजकर विनयपूर्वक उस आत्मज्ञान को जानना चाहिये। ज्ञान को जानने के लिए मनुष्य के अंदर प्रेम, श्रद्धा और विश्वास होना चाहिए। यदि मनुष्य के अंदर श्रद्धा-भाव नहीं होगा, तो उसे वह ज्ञान फलीभूत नहीं होगा।

मोहि कपट छल छिद्र न भावा

माताश्री राजेश्वरी देवी

प्रेमी सज्जनों! आप चाहे हमारे भक्त लोग हैं या श्रोता लोग, आप लोग ध्यान से सत्संग सुनो। वास्तव में जीवन में हमारे पास बहुत से काम रहते हैं। जब तक मनुष्य जीवित रहता है, तब तक शरीर की उलझनें छूटती नहीं हैं। धर्मशास्त्रों में मनुष्यों के लिए आत्मज्ञान को जानने के लिए कहा गया है। भगवान श्री राम भी कहते हैं-

बड़े भाग मनुष्य तन पावा।

यह जो मनुष्य तन है, बड़े भाग्य से मिलता है। इस तन के लिए देवता लोग भी याचना करते हैं कि अगर हमें यह मनुष्य शरीर मिलता, तो हम भी सत्कर्म और भगवत् भजन करते। मैं ज्ञान के प्रचार के लिए बहुत से देशों में गई। मैंने जीवन में बहुत से जानवर देखे। पर, मनुष्य के बराबर कोई दूसरा उपकारी मैंने नहीं देखा। वास्तव में जानवर कर्म नहीं कर सकते हैं। जितने भी जल में रहने वाले जीव हैं और जितने भी पशु-पक्षी हैं, वे कर्म नहीं कर सकते, वे तो केवल भोग ही भोग सकते हैं। उनको अच्छा से अच्छा भोजन मिल सकता है, पर वे आगे के लिए कर्म नहीं कर सकते, भगवान का भजन नहीं कर सकते। परमात्मा दयालु है और बिना कर्म किये हुए भी उन सबको भोजन देता है। ऐसे-ऐसे जानवर होते हैं, जो पानी से ही अपना आहार पूरा कर लेते हैं। उनके

लिए खेती नहीं है, उनके लिए जंगल नहीं है, केवल पानी ही है। पानी में ऐसे-ऐसे तत्व मिले हैं, जिससे जानवरों को पूरा भोजन मिल जाता है। यदि उसको



पानी से निकाल दो, तो वह प्राण त्याग देता है। ठीक यही गति मनुष्य की बताई गई। यदि मनुष्य बहुत धनवान भी बन जाये, सारे संसार का बादशाह भी बन जाये; लेकिन, यदि उसने अपनी जिन्दगी में परमात्मा को नहीं जाना, भगवान के पावन नाम को नहीं जाना, तो उसने जीवन में कुछ भी नहीं जाना। जीवन में मनुष्य के लिए भोजन तो जरूरी है, लेकिन उसके साथ-साथ उसे सद्गुरु महाराज से भगवान के सच्चे नाम को जानकर भजन-सुमिरण भी करना चाहिए, तभी यह मनुष्य जीवन सार्थक होगा।

जब हम बहुत छोटे थे, तब हमारे

देश में बड़े-बड़े आन्दोलन हुए। उस समय हम अंग्रेजों के गुलाम थे और पूरे देश के लोगों की एक ही आवाज थी कि हमको अंग्रेजों की गुलामी से

स्वतंत्र किया जाये, आजाद किया जाये। अंग्रेज हमारे देश को गुलाम बनाए हुए हैं, हम उनकी गुलामी नहीं चाहते हैं। उस समय भारत के लोगों में कितनी एकता रही होगी और आपस में कितना बड़ा संगठन रहा होगा कि दो सौ साल से जो अंग्रेज हमारी भारत भूमि पर बसे हुए थे, हम लोगों ने अपने एकता के बल पर उनको उखाड़ फेंका।

पिछली बार मैं कोलकाता गई। वहाँ प्रोग्राम में हजारों लोग शामिल हुए। वहाँ भी हमने सुनाया कि भारत को आजाद कराने के लिए उस समय देश के लोगों में कितनी एकता थी, कितना मजबूत संगठन था। जिस आजादी के ध्येय को लेकर हम लोग चले थे, हमने एकजुटता से उसे प्राप्त कर लिया। लेकिन आजादी के बाद से जब हम लोगों के अंदर वह एकता भंग हो गई, तो हम फिर से छिन्न-भिन्न होने लगे। भक्तों में एकता नहीं होने के कारण ठीक ऐसा ही हाल अध्यात्म-मार्ग में भी होता है।

चाहे राजनीति का मार्ग हो या

अध्यात्म का मार्ग हो, जब गलत लोग संगठन में घुस जाते हैं, तो वे लोग अपना हित तो समझते नहीं हैं, बल्कि अपने साथ दूसरों का अहित भी करते हैं। बड़ी से बड़ी महान् शक्तियाँ इस भूमि पर अवतरित हुई हैं। भगवान श्रीराम का इतिहास ही देख लीजिये, उनका सारा जीवन कितना दुःखमय बना। भगवान श्रीकृष्ण के जीवन की तो शुरुआत ही दुःखों से हुई। कंस ने उनके माता-पिता को जेल में डाल दिया। वास्तव में जब मनुष्य अपने जीवन के ध्येय को नहीं समझता है, तो उसका मन गलत कामों की ओर जाता है। वह समाज को छिन्न-भिन्न करने का प्रयास करता रहता है।

संत-महापुरुषों का ज्ञान बड़ा सूक्ष्म है और मनुष्य का मन भी बड़ा सूक्ष्म है। महापुरुष कहते हैं कि इस सूक्ष्म मन को सूक्ष्म ज्ञान में जोड़ दो, यह जो तुम्हारी चित्तवृत्ति बाहर को भाग रही है, इसको अन्दर की तरफ को मोड़ो। लेकिन मनुष्य चित्तवृत्ति को अन्दर की तरफ न मोड़ करके उसको बाहर की तरफ फैलाता जाता है, जिससे उसका अपना भी नुकसान होगा और वह दूसरों का भी अहित करेगा।

इसलिए संत तुलसीदास जी ने दुष्ट प्रकृति के लोगों की भी वन्दना की और जो सज्जन थे, उनकी भी वन्दना की। उन्होंने सन्त और असन्त की तुलना की। उन्होंने कहा कि सन्त आने से घर में खुशी होती है, घर पवित्र होता है, आत्मा प्रसन्न हो जाती है, उसका दर्शन करके जीवन सफल हो जाता है। लेकिन वहीं जब असन्त आ जाता है, तो उसके डर से सारे परिवार को अगाध दुःख

पहुँचता है और जब वह बिछुड़ता है, तब सुख होता है। सन्त जब बिछुड़ता है, तब दुःख होता है। जैसे कि एकता और संगठन के बल पर बड़े-बड़े काम लोगों ने किये। जब एकता समाप्त हो जाती है, तब अकेला मनुष्य कुछ नहीं कर सकता है, वह छिन्न-भिन्न हो जाता है। जब परिवार के लोग घर के मुखिया के आदेश को नहीं मानें, अनुशासन में नहीं रहें और सभी लोग ऑर्डर देने लग जायें, तो वह परिवार भी छिन्न-भिन्न हो जाता है।

ठीक इसी तरह यह अध्यात्म-मार्ग बड़ा सूक्ष्म मार्ग है। इस मार्ग में छल-

यह जो मनुष्य तन है, बड़े भाग्य से मिलता है। इस तन के लिए देवता लोग भी याचना करते हैं कि अगर हमें यह मनुष्य शरीर मिलता, तो हम भी सत्कर्म और भगवत् भजन करते।

कपट नहीं करना चाहिये। भगवान श्रीराम कहते हैं-

मोहि कपट छल छिद्र न भावा।

निर्मल मन जन सो मोहि पावा ॥

मुझको तो छल-कपट चाहिए ही नहीं, जो मनुष्य छल-कपट करके मुझे प्राप्त करना चाहता है, वह सपने में भी मुझे प्राप्त नहीं कर सकता। आज मनुष्य छल-कपट भी करना चाहता है और परमार्थ का आनन्द भी लेना चाहता है। भाई, दोनों चीजें एक साथ हो नहीं सकतीं। यदि आनन्द की अनुभूति करना चाहते हो, तो छल-छिद्र को छोड़ दो। मेरा मूल विषय यह था कि बहुत से लोग सुनी-सुनाई अफवाहों में भ्रमित हो जाते हैं और बहुत से लोग ऊंचाई पर चढ़ने के बाद भी गिर जाते हैं। कहा है कि जब तक अपनी आँखों

से न देखो, अपने कानों से न सुनो, तब तक उस बात को सत्य मत मानो। देखो, महापुरुषों का जो ज्ञान है, वह सत्य होता है। महापुरुष कभी भी तुम्हें गलत मार्ग में नहीं लगायेंगे। वे हमेशा सत्य मार्ग में ही लगाने की कोशिश करते हैं। पर, मनुष्य सत्य को जानने की कोशिश नहीं करता है। मनुष्य सोचता है कि ये मेरा अहित चाहते हैं, मुझसे कुछ लेना चाहते हैं; लेकिन ऐसा नहीं है। समाज में कुछ गलत लोग भी होते हैं, जो सत्य के मार्ग से तुम्हें गिराने का प्रयत्न करेंगे, वे तुम्हें सही मार्ग पर नहीं लगायेंगे। सत्य के मार्ग पर लगाने

का काम तो केवल महान शक्तियाँ ही कर सकती हैं, दूसरा कोई नहीं कर सकता। गुरु महाराज जी ने जो ज्ञान तुम्हें दिया है, उसका भजन करो, सुमिरण करो। बाकी संसार की सारी चीजें तो यहीं पर छूट जायेंगी। लेकिन, यह भगवान के नाम का सुमिरण ही ऐसा साधन है, जो अन्तिम क्षण तक तुम्हारे साथ रहेगा। इस धन को संतों ने सबसे बड़ा धन बताया।

ज्ञान के प्रचार के लिए मैं बहुत जगह गई। सभी जगह लोग शान्ति चाहते हैं, हर मनुष्य शान्ति चाहता है। हर मनुष्य कहता है कि मुझे शान्ति चाहिए। अगर मनुष्य को भरपेट भोजन भी मिल जाये, तब भी भजन के बिना वह असन्तुष्ट ही रहता है। बहुत से सम्पन्न देश हैं, उन देशों में उनके जरूरत की पूरी चीजें हैं। पर, फिर भी वहां के लोग बहुत अशान्त हैं, उनके मन में शान्ति नहीं है। मन की शान्ति प्राप्त करने के लिए वे भारत देश में ही आते हैं। भारत में आकर ही वे मन की शांति की तलाश करते हैं। यही हमारे देश की महानता है।

सत हरि भजन जगत सब सपना

माताश्री मंगला जी

प्रेमी सज्जनों! जब हम संसार से जाएंगे तो एक कफन का टुकड़ा भी साथ में नहीं जायेगा, तो बताओ फिर और क्या साथ ले जाओगे? सारा बैंक बैलेंस, सारे कपड़े, बड़े-बड़े मकान, अटारी-सब यहीं रह जाएंगे। सिकन्दर के बारे में आपने सुना होगा। सिकन्दर ने अपने लोगों से कहा कि जब मैं मरूँ, और जब मेरी शव यात्रा निकाली जाए, तो अर्थी से मेरे दोनों हाथ बाहर निकाल देना। तो उसके मंत्रियों ने पूछा -क्यों? उसने कहा- मैं संसार के लोगों को यह बताना चाहता हूँ कि सारी जिंदगी मैं लड़ाइयाँ लड़ता-लड़ता आज इस मुकाम पर पहुँचा हूँ कि अब मैं इस दुनिया से सब कुछ यहीं छोड़कर खाली हाथ जा रहा हूँ। मैंने सिर्फ लड़ाई ही लड़ाई की, दुनिया के देशों को जीतने के लिए। मैंने अपने सांसारिक साम्राज्य को तो बहुत बढ़ाया, पर आध्यात्मिक साम्राज्य को मैंने जीरो कर दिया। जब मैं संसार से जाऊँ, तो लोग समझें कि आया तो था, इतना बड़ा सिकंदर; लेकिन जब वह संसार से गया, तो वह भी खाली हाथ ही गया। वह भी संसार से कुछ नहीं लेकर गया। जब हम सत्संग को सुनते हैं, समझते हैं और उसको अपने जीवन में ढालने का प्रयास करते हैं। तभी बदलाव आता है, जागृति आती है। आज सिकंदर तो नहीं बन सकते, लेकिन सिकंदर की सीख को जीवन में अपना सकते हैं। अगर अध्यात्म ज्ञान नहीं होता, तो मनुष्य का उद्धार कैसे होता? संतों ने हर एक युग



की विशेषता बताई है; किन्तु कलियुग का विशेष महत्व बताया। कलियुग में केवल प्रभु नाम का सुमिरण करके ही

जीव भवसागर से पार हो सकता है। कहा भी है-

कलियुग केवल नाम अधारा।

सुमिर सुमिर नर उतरहिं पारा॥

जब प्रभु के सच्चे नाम का ज्ञान होगा, तब ही उसका सुमिरण करके भव सागर से पार उतर सकते हैं। आप अच्छा जीवन जियो, भगवान ने सब कुछ दिया है, तो उसका उपभोग करो; लेकिन अपने जीवन के चौबीस घंटे के समय में उस प्रभु को भी याद रखो; क्योंकि उसके बिना यह सब फीका है। यह सब तो यहीं रह जाना है। इसलिए, वह भक्ति भी करो जो हमारे साथ जाएगी। हम देखते हैं कि सारे संसार में अध्यात्म की प्यास लगी है। लोग भिन्न-भिन्न रास्तों में लगे हैं, भिन्न-भिन्न जगहों में जा रहे हैं। पर, सभी संतों का एक ही विचार है कि प्रभु का भजन करो। संत स्वाभाविक ही परमार्थी होते हैं, वे सब जीवों का भला चाहते हैं; परन्तु जीवात्माएं अपने-अपने शिक्षा और संस्कारों से अलग-अलग

होती हैं। जैसे दुर्योधन और अर्जुन। कुरुक्षेत्र के मैदान में दुर्योधन भी था और वहीं अर्जुन भी खड़ा था। लेकिन

भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को ही ज्ञान दिया; क्योंकि अर्जुन ने ही अपनी जिज्ञासा उनके समक्ष रखी। भगवान ने कहा कि अर्जुन तू युद्ध भी कर और मन से मेरा सुमिरण भी कर। यह बहुत रहस्य की बात है। हम भाग्यशाली हैं, जो ऐसे कलिकाल में भी हमें आत्मा के ज्ञान के बारे में सुनने को मिल रहा है। हम ज्ञान के बारे में जान

पा रहे हैं, उसे पहचान पा रहे हैं; क्योंकि जब प्यास लगती है, तो लोग कहते हैं कि आप यह पी लो, वह पी लो; लेकिन प्यास तो पानी की लगी है। इसलिए थोड़ा-सा पानी मिल जाता है, तो वह बुझ जाती है। ऐसी ही अध्यात्म की भी प्यास है। आप, जब स्वयं उस प्यास को समझोगे, जब आपको अध्यात्म ज्ञान मिलेगा, अध्यात्म की ताकत मिलेगी, तो आप समझ जाओगे कि वह प्यास कैसे बुझती है। तब, आप दूसरों को भी समझाओगे।

गुरु नानकदेव जी के पिता जी दुकानदार थे और एक दिन उन्होंने नानकदेव जी को दुकान पर बैठा दिया। जब कोई सौदा लेने आया तो वे एक, दो, तीन करते-करते, बारह, तेरह पर पहुँच गए। जैसे ही उनके मुख से तेरह निकला, तो उन्हें अहसास हुआ कि सब कुछ तेरा ही है। और वे तेरा-तेरा ही करते रह गए, उससे आगे नहीं बढ़ पाए। वे उस समय छोटे बालक थे। कहने लगे

कि जब सब कुछ तेरा ही है, तो मेरा क्या है? उन्हीं दो शब्दों ने उनके जीवन को बदल दिया और उन्होंने अध्यात्म की खोज करी। उस तरह ने ही उनके अंदर जागृति ला दी। जब गुरु कृपा से वे उस रब को जान गये, तो उन्होंने कहा-

नानक दुखिया सब संसारा।

सुखिया सोई जो नाम आधारा।।

वही सुखिया है, जिसने नाम को आधार बना रखा है। इसलिए, अपने जीवन को ऐसा बनाओ कि जब तुम इस संसार से जाओ, तो उस प्रभु को प्राप्त कर सको। चाहे कोई चार दिन में जाए, कोई दो महीने में जाए, कोई दस साल में जाए, जाना तो सबने है, यहाँ किसी की गारंटी नहीं है। आज भी ईजिप्ट में बड़े-बड़े पिरामिड बनाए हुए हैं, उनके अंदर उनकी बॉडी रखी है, लोशन लपेटे हुए हैं, जड़ी-बूटियों से उनको संभाल रखा है कि ये अजर-अमर रहेंगे; लेकिन वे भी कंकाल बन चुके हैं; क्योंकि जो प्राणशक्ति हमें चलाती है, वह अंदर से चली गई, तो केवल कंकाल ही बचता है।

यह सत्संग बार-बार क्यों किया जाता है? क्योंकि हम भूल जाते हैं, तो फिर कहते हैं की सत्संग में चलो थोड़ा आत्मा के बारे में सुनेंगे, परमात्मा के बारे में सुनेंगे। आपके क्षेत्र में बाईजी, महात्माजी जाते हैं, सत्संग सुनाते हैं; इसमें उनका कोई स्वार्थ नहीं है, वे सब स्वार्थ रहित हैं। वे अपना भरपूर जीवन जी रहे हैं; क्योंकि उन्होंने ज्ञान को जान लिया है; उनके पास ज्ञान की दौलत है, उस दौलत के आगे संसार की सब दौलत फीकी है। लेकिन, वे अध्यात्म ज्ञान के प्रचार के लिए संसार में जाते हैं, समाज को जगाने की बात करते हैं।

जैसे दीपावली में असंख्य बत्त्व

जलाते हैं, पर जब बत्ती चली जाती है, तो अंधेरा हो जाता है। ऐसे में एक छोटा-सा दीपक भी घर को रोशन कर देता है। इसी तरह हम ज्ञान के प्रकाश में जीवन को जिंएंगे, तो गुरु महाराज जी की कृपा ही कृपा है। जीवन में प्रकाश गुरु की कृपा से ही होता है। कहा भी है-

सतगुरु की महिमा अनंत,

अनंत किया उपकार।

आप अच्छा जीवन जियो, भगवान ने सब कुछ दिया है, तो उसका उपभोग करो; लेकिन अपने जीवन के चौबीस घंटे के समय में उस प्रभु को भी याद रखो; क्योंकि उसके बिना यह सब फीका है। यह सब तो यहीं रह जाना है।

लोचन अनंत उघाड़िया,

अनंत दिखावनहार।।

गुरु महाराज ने हमें अनंत प्रकाश की क्रिया दी है, जिस प्रकाश को हम ज्ञाननेत्र से देख सकते हैं, अनुभव कर सकते हैं, जान सकते हैं और उस ज्ञान के मार्ग पर चल सकते हैं। सत्संग हमें यही सिखाता है। यह नहीं कि भंडारा तो याद रहे और सत्संग की बातें भूल जायें; क्योंकि बहुत से भक्त कहते हैं कि आज बहुत अच्छा भोजन-प्रसाद बना है। अभी कुछ दिन पहले हम नेपाल गए थे, तो बड़ा अच्छा लगा। वहाँ पशुपतिनाथ जी के दर्शन किए, बहुत भक्त लोग हमारे साथ गए थे; बहुत सुंदर दर्शन हुए, तो दर्शन-परसन से एक अलग-सी दिव्य अनुभूति होती है। चाहे हम केदारनाथ जी चले जाएं, पशुपतिनाथ जी चले जाएं, बद्रीनाथ जी चले जाएं, सारे तीर्थ स्थान हमें एक ही शिक्षा देते हैं कि मंदिर में जो है, वही तुम्हारे अंदर भी है-

मन मंदिर दिल द्वारिका,

काया काशी जान।

दसवां द्वारा देहरा,

तामें ज्योति पहचान।।

भगवान शिव ने भी माता पार्वती को यही कहा-

उमा कहउँ मैं अनुभव अपना।

सत हरि भजन जगत सब सपना।।

यह संसार सपने की तरह है, थोड़ी देर के लिए सपना आता है, तो सपने में हमें सब कुछ दिखने लग जाता है; सुंदर जीवन, अनन्य प्रेम, अनन्य भक्ति, सब कुछ स्वप्न में दिखता है; लेकिन, जब स्वप्न टूटता है, तो सब झूठा लगता है। इसीलिए हमें विश्वास नहीं होता कि वह स्वप्न साकार भी होगा कि नहीं? लेकिन, सत्संग द्वारा हमारा भक्ति का स्वप्न साकार हो जाता है। हम गुरु भक्तों की श्रेणी में आ जाते हैं। जब शरीर में पीड़ा होती है, तो डॉक्टर के पास जाते हैं। इसीलिए कहते हैं, समय का राजा, समय का वैद्य और समय का अध्यात्मवादी ही हमें पीड़ा से बचा सकता है। मुझे लगता है कि 24 घंटे में कभी न कभी ऐसा विचार अवश्य आता होगा कि हम संसार में आए हैं और एक दिन यहां से चले जाएंगे। जब यह विचार आता है, तो सत्य की खोज करते हैं। भगवान ने सबको थोड़ा-थोड़ा समय दिया है कि जाओ, ढूँढ़ो। मनुष्य चोला ही उस सत्य को जानने का माध्यम है। दुःख-सुख भी यहीं मिलता है, सब कुछ इसी मनुष्य योनि में मिलता है। सब कुछ कमाते हो, तो उसको गंवाते भी हो। संतान भी होती है, फायदा देती है, नहीं देती है; अनेक जन्मों के कर्मों का फल दुःख-सुख के रूप में मिलता है। इसलिए इन सभी सांसारिक द्वंदों में रहते हुए भी प्रभु भक्ति में मन लगाओ, इसी से मानव तन सार्थक होगा।

GREAT TEACHERS ARE RECOGNIZED THROUGH THEIR TEACHINGS

MATA SHRI MANGLA JI

Dear Premies, Man today is constantly engaged in developing means for his physical well-being and for his bodily needs & pleasures. First, he constructs a house. Then, he arranges for good furniture and matching drapes. He spends his entire life in such pursuits but doesn't make any endeavors to discover his inner (spiritual) treasures.

Lord Rama left Ayodhya to live in the jungle for 14 years. He saw many Rishis & Munis doing their spiritual practices. They were often disturbed and tormented by others with evil tendencies (Rakshasas).

Upon reaching the ashram of Agastya Muni, Lord Rama was quite impressed with its serenity and peace. He told Laxmana, that such a spiritual adobe is indeed superior to even the royal palace of Ayodhya! Sutikshan Muni tells Lord Rama that he had been worshipping the Holy Name for years and was eager to meet Rama. Lord Rama replies that the purpose behind his own birth was to protect Rishis and Munis. Such (spiritual) purpose alone is the key

difference between the life of the ordinary and that of great men.

Great teachers talk about unity or oneness in diverse forms. They guide us to get Guru Maharaj Ji's darshan



(blessings), to listen to spiritual discourses (satsang) and to return to our homes with an inspiration and will to do good. Great teachers are recognized only by true disciples, who gain immensely from their inner experiences. In this Kaliyuga, our ashram offers great peace and protection. It is a miracle that you all are sitting here with love and compassion and attending to this spiritual discourse.

Shri Mata Ji used to say that great spiritual teachers are in

their family. As materialism and sin is rampant in Kaliyuga, the preachings of such great souls are of immense use to all. In Treta Yuga, Lord Rama had to face a lot of difficulties and hardships. In

Dwapar Yuga, Lord Krishna protected his disciples from injustice and tortures at the hand of evil doers.

The knowledge given by Guru Maharaj Ji is like a precious pearl that never loses its shine. A fake pearl loses its shine if kept in water for a few days. As the disciple puts this knowledge in proper practice, his spiritual treasure grows by the day.

This treasure is the Holy Name of God within us. As a person develops deeper spiritual realizations, his soul continually progresses and he doesn't get entangled in materialism or other worldly matters. To understand and realize this spiritual knowledge, one needs to be pure hearted.

We spend our entire life does daily work chores, and don't find time to practice the knowledge of God. We always defer it to tomorrow. The Saints say, "It's better to do good things today, rather

than postponing them to tomorrow”.

Once a disciple prays to God that let your divine wishes guide the purpose of my life. Let my thoughts be aligned to providence. God tells him that if everyone thinks like him, then there would be peace on earth. God responds that all those disciples who remember Him, would be blessed.

In the evening fireflies think that they alight the earth. However, when stars sparkle in the sky, the light of fireflies gets faded. Stars may think that they provide the light to the world. But, as the moon lights up the sky, the pride of the stars also goes away. In turn the moon thinks that it is the source of light. But when the sun rises in the morning, the light of the moon also disappears! Similarly, people who gather worldly knowledge and education may develop unwanted pride. It is important to remember that spiritual knowledge is not a matter of discussion or debate, it is the way of achieving everlasting peace and happiness.

Guru Ji's ashram is like a deep sea, where each disciple gets blessings according to their capacity.

This sea neither dries up! We are indeed lucky that in this Kaliyuga, we have the guidance and support of our teacher to aid our progress on the spiritual path. Without this inner light, life is certainly in the dark. One day when the soul leaves the body, it is declared dead and turns to dust.

In Egypt, a special herbal paste was used to preserve dead bodies in pyramids. These are called mummies. Upon digging, the archeologists found that these bodies were well preserved; the organs and even the hair and teeth were intact. But in spite of this, the Mummy is devoid of life force and as such nothing more than dust.

By God's grace, one attains human form to gather the knowledge of God and practice spiritual teachings. Holy Saints say:

“After going through eighty four lakhs life forms, one gets human birth, let us remember the Holy Name as the final day is nearing.”

We do not appreciate the importance of this human birth and waste it in availing the worldly pleasures and materialistic things.

Small kids get highly influenced by TV serials.

Recently an eleven year old child stole a gun, called all his fellow students and the teacher to the class room, then closed the door inside and started shooting. Later he revealed that he had seen similar violence on television.

We need to guide our kids on the right path from the childhood itself, lest they take the wrong path and become evil doers (or monsters). Karma, or the actions performed is the distinction between a noble person and an evil one. Parents should take their kids to spiritual programs and discourses. They should discuss spiritual subjects at home so that the kids understand and develop good qualities.

A gardener often gives a wooden support to his plants. Later these plants grow to become great trees. The Prahlada and Dhruva were young disciples who attained God at an early age.

Spiritual festivals like Navratri for Goddess Durga, Ramnavmi or Janmashtami remind us of the inspiring lives and charitable deeds of great teachers. In spite of regular celebrations of these festivals, there is a lack of peace. So we should constantly remember the Holy Name.

गंगा दशहरा है, आज भी प्रासंगिक

हमारे देश की संस्कृति और सभ्यता में नदियों का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रहा है। यहाँ नदियों को केवल जल का स्रोत नहीं माना गया, बल्कि उन्हें माँ के रूप में सम्मानित किया गया है। इन्हीं पावन नदियों में गंगा का स्थान सर्वोच्च है। गंगा केवल एक नदी नहीं, बल्कि भारतीय आस्था, परंपरा, संस्कृति और आध्यात्मिक चेतना का प्रतीक है। गंगा

नाश करने वाली माना गया है। पुराणों और वेदों में गंगा की महिमा का अनेक स्थानों पर वर्णन मिलता है। ऋग्वेद में गंगा को पवित्र नदी के रूप में उल्लेखित किया गया है।

सनातन धर्म में यह मान्यता है कि गंगा जल में स्नान करने से मनुष्य के पाप नष्ट हो जाते हैं और आत्मा को शुद्धता प्राप्त होती है। इसी कारण भारत के विभिन्न भागों से लाखों श्रद्धालु



के प्रति भारतीय समाज की श्रद्धा इतनी गहरी है कि उसे **“पतित पावनी माँ गंगा”** कहकर संबोधित किया जाता है।

गंगा दशहरा ऐसा पावन पर्व है जो माँ गंगा के पृथ्वी पर अवतरण की स्मृति में मनाया जाता है। यह पर्व ज्येष्ठ मास के शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि को मनाया जाता है। धार्मिक मान्यता है कि इसी दिन माँ गंगा स्वर्ग से पृथ्वी पर अवतरित हुई थीं। इस अवसर पर श्रद्धालु गंगा जल में स्नान कर अपने पापों से मुक्ति की कामना करते हैं और पुण्य प्राप्त करते हैं। गंगा दशहरा केवल एक धार्मिक उत्सव ही नहीं है, बल्कि यह भारतीय संस्कृति की उस परंपरा को भी दर्शाता है, जिसमें प्रकृति और मानव जीवन का गहरा संबंध रहा है।

भारतीय धर्मग्रंथों में गंगा को मोक्षदायिनी और पापों का

माँ गंगा के तटों पर स्नान करने के लिए एकत्रित होते हैं। गंगा केवल धार्मिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि सांस्कृतिक दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। गंगा के तटों पर अनेक महान नगर विकसित हुए हैं, जैसे ऋषिकेश, हरिद्वार, प्रयागराज, पटना व वाराणसी। इन स्थानों पर सदियों से धार्मिक अनुष्ठान, शिक्षा और संस्कृति का विकास होता रहा है।

गंगा दशहरा का संबंध माँ गंगा के पृथ्वी पर अवतरण की पौराणिक कथा से है। यह कथा रामायण, भागवत पुराण और अन्य पुराणों में भी वर्णित है। कथा के अनुसार राजा सगर के साठ हजार पुत्र थे। एक बार उन्होंने अश्वमेध यज्ञ किया। यज्ञ का घोड़ा देवताओं के राजा इंद्र ने चुरा लिया और कपिल मुनि के आश्रम में बांध दिया। जब

सगर के पुत्र घोड़े की खोज करते हुए वहाँ पहुँचे, तो उन्होंने कपिल मुनि पर चोरी का आरोप लगा दिया। क्रोधित होकर कपिल मुनि ने उन्हें श्राप दे दिया, जिससे वे सभी भस्म हो गए। उनकी आत्माओं को मुक्ति तभी मिल सकती थी, जब स्वर्ग से माँ गंगा पृथ्वी पर आकर उनके अस्थि अवशेषों को स्पर्श करतीं। सगर के वंशजों में राजा भगीरथ ने अपने पूर्वजों की मुक्ति के लिए कठोर तपस्या करने का निश्चय किया। उन्होंने वर्षों तक भगवान ब्रह्मा जी की आराधना की। भगीरथ की कठोर तपस्या से प्रसन्न होकर ब्रह्मा ने उन्हें वरदान दिया कि गंगा पृथ्वी पर अवतरित होंगी; परंतु समस्या यह थी कि गंगा का वेग इतना प्रबल था कि यदि वे सीधे पृथ्वी पर उतरतीं तो पृथ्वी का विनाश हो सकता था।

तब ब्रह्मा जी ने भगीरथ को भगवान शिव की आराधना करने का सुझाव दिया, क्योंकि वे ही गंगा के वेग को नियंत्रित कर सकते थे। राजा भगीरथ ने भगवान शिव की कठोर तपस्या की। शिव जी उनकी भक्ति से प्रसन्न हुए और उन्होंने गंगा को अपनी जटाओं में धारण करने का वचन दिया। जब माँ गंगा स्वर्ग से पृथ्वी पर उतरीं, तो भगवान शिव ने उन्हें अपनी जटाओं में समेट लिया और धीरे-धीरे पृथ्वी पर प्रवाहित किया। इस प्रकार गंगा का पवित्र जल पृथ्वी पर बहने लगा।

माँ गंगा राजा भगीरथ के रथ के पीछे-पीछे चलती हुई उस स्थान पर पहुँचीं जहाँ सगर के पुत्रों की अस्थियाँ थीं। पतित पावनी माँ गंगा के जल से स्पर्श होते ही उनकी आत्माओं को मुक्ति मिल गई। इसी कारण माँ गंगा को **“भागीरथी”** भी कहा जाता है। माँ गंगा के पृथ्वी पर अवतरण की स्मृति में गंगा दशहरा का पर्व मनाया जाता है। यह पर्व पापों के नाश और पुण्य की प्राप्ति का प्रतीक माना जाता है।

धार्मिक मान्यता के अनुसार इस दिन गंगा स्नान करने से मनुष्य के दस प्रकार के पाप नष्ट हो जाते हैं। इसलिए इसे **“दशहरा”** कहा जाता है। लोग इस दिन दान-पुण्य करते हैं, गंगा की पूजा करते हैं और जल में दीप प्रवाहित करते हैं।

माँ गंगा के तट पर अनेक स्थानों पर धार्मिक सभाएँ और भजन-कीर्तन भी आयोजित किए जाते हैं। गंगा दशहरा के दिन प्रातःकाल गंगा स्नान का विशेष महत्व होता है। श्रद्धालु सूर्योदय से पहले गंगा तट पर पहुँचकर स्नान कर भगवान शिव तथा गंगा माता की आराधना करते हैं। इसके अतिरिक्त दान-पुण्य करना भी अत्यंत शुभ माना जाता है। गरीबों को अन्न, वस्त्र और जल का दान किया जाता है। गंगा नदी भारत की सभ्यता- संस्कृति के विकास में

अत्यंत महत्वपूर्ण रही हैं। माँ गंगा के तटों पर प्राचीन काल से ही अनेक तीर्थ, नगर और संस्कृतियाँ विकसित हुई हैं। वाराणसी, प्रयागराज और हरिद्वार जैसे शहर आज भी सनातन संस्कृति के धार्मिक और सांस्कृतिक केंद्र के रूप में पहचाने जाते हैं। इन स्थानों पर लाखों लोग प्रतिवर्ष तीर्थयात्रा के लिए आते हैं। माँ गंगा केवल आध्यात्मिक ही नहीं, बल्कि आर्थिक और सामाजिक विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती रही हैं। गंगा नदी केवल धार्मिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि पर्यावरणीय दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह करोड़ों लोगों को जल प्रदान करती है और कृषि के लिए जीवनदायिनी है।

परंतु, आधुनिक समय में गंगा नदी प्रदूषण की गंभीर समस्या से जूझ रही है। औद्योगिक कचरा, प्लास्टिक और अन्य अपशिष्ट पदार्थ नदी को दूषित कर रहे हैं। यह स्थिति अत्यंत चिंताजनक है और हमें इसके संरक्षण के लिए गंभीर प्रयास करने की आवश्यकता है। गंगा की पवित्रता और स्वच्छता बनाए रखना हमारा सामूहिक कर्तव्य है। यदि गंगा प्रदूषित होती है, तो इसका प्रभाव न केवल पर्यावरण पर पड़ेगा, बल्कि करोड़ों लोगों के जीवन निर्वाह पर भी पड़ेगा। भारत सरकार द्वारा **“नमामि गंगे”** जैसी योजनाएँ चलाई जा रही हैं, जिनका उद्देश्य गंगा को स्वच्छ बनाना है; परंतु केवल सरकारी प्रयास पर्याप्त नहीं हैं। समाज के प्रत्येक व्यक्ति को इस दिशा में जागरूक होना होगा। आज के युग में गंगा दशहरा का महत्व और भी अधिक बढ़ गया है। यह पर्व हमें प्रकृति के प्रति सम्मान और संरक्षण का संदेश देता है।

गंगा केवल एक धार्मिक प्रतीक नहीं, बल्कि जीवन का आधार है। इसलिए हमें माँ गंगा की स्वच्छता और संरक्षण के लिए संकल्प लेना चाहिए। यदि हम गंगा को स्वच्छ और निर्मल बनाए रखेंगे, तो आने वाली पीढ़ियाँ भी इसकी पवित्रता और महिमा का अनुभव कर सकेंगी। गंगा दशहरा भारतीय संस्कृति का एक अत्यंत पवित्र और महत्वपूर्ण पर्व है। यह पर्व हमें हमारी पौराणिक परंपराओं की याद दिलाता है और साथ ही प्रकृति के प्रति हमारे कर्तव्यों का भी बोध कराता है। गंगा केवल एक नदी नहीं, बल्कि भारतीय सभ्यता की जीवनरेखा है। इसकी पवित्रता और महिमा को बनाए रखना हम सभी का कर्तव्य है। यदि हम गंगा की रक्षा करेंगे, उसे स्वच्छ और निर्मल बनाए रखेंगे, तो यह मानव जीवन को सदैव पवित्र और समृद्ध बनाती रहेगी। प्रतिवर्ष गंगा दशहरा हमें सनातन आस्था व कृतज्ञता भाव की वृद्धि और प्राकृतिक परिवेश के संरक्षण का संदेश देता है। ■

प्रतीति निरूपण

छत्रपति शिवाजी महाराज के सद्गुरु श्री समर्थ रामदास जी अपने ग्रंथ दासबोध में प्रतीति अर्थात विश्वास के बारे में विस्तार से उल्लेख करते हैं। वे कहते हैं कि प्रतीति का विचार करने वाले लोग ही चतुर होते हैं। जो लोग प्रतीति का विचार नहीं करते, वे पागल और दीन हैं। यदि अनेक प्रकार के

प्राण तक जाने का धोखा रहता है। इसलिए, भले आदमियों को कभी कोई काम केवल अनुमान से नहीं करना चाहिए; क्योंकि उससे लाभ के बदले हानि ही होती है। पानी में बैठी हुई भैंस खरीदना बुद्धिमानी नहीं है। बिना समझे-बूझे कोई काम करने से अन्त में पछताना ही पड़ता है। बहुत से लोग



रत्न और सिक्के आदि बिना परखे हुए ले लिये जायं, तो हानि ही होती है। इसी प्रकार यदि मन में प्रतीति या विश्वास न हो, तो सत्संग-प्रवचन में बैठना ही नहीं चाहिए। घोड़े और शस्त्र को चलाकर देख लेना अच्छा होता है; और यदि वे ठीक जंचें, तभी उन्हें लेना चाहिए। जब समझ में आ जाये कि ये बीज उगेंगे, तब ही धन लगाकर वे बीज खरीदने चाहिए। इसी प्रकार मन में विश्वास हो जाने पर ही कक्षा निरूपण में बैठना चाहिए। जब इस बात का विश्वास हो जाय कि अमुक औषधि की मात्रा लेने से हमारा शरीर रोगमुक्त हो जायेगा, तभी उस औषधि का सेवन करना चाहिए। बिना विश्वास के औषधि खाना, मानों अपना स्वास्थ्य और भी बिगाड़ना है। केवल अनुमान से कोई काम करना मूर्खता है। बिना यह पूरा विश्वास हुए कि यह सोना है, उसका गहना बनवा लेना, मानों जान-बूझकर ठगा जाना है। बिना समझे-बूझे कोई काम करना ठीक नहीं। उसमें

केवल विश्वास में आकर मकान खरीद लेते हैं, पर उसमें कपटी लोगों का जो कपट निकल आता है, उसे पहले से समझ लेना चाहिए। बिना देखे-भाले अन्न-वस्त्र आदि लेकर कभी-कभी लोग अपने प्राण तक गंवा बैठते हैं। झूठे आदमियों का विश्वास करना ही बड़ी भारी मूर्खता है। चोर के साथ रहने से अवश्य हानि होती है; और पता लगाने से मालूम हो जाता है कि कौन चोर है और कौन ठग है। अविश्वनीय, कीर्तिमय बनाने के बहाने से लोगों को ठगने वाले, भेष बदलकर लोगों को ठगने वाले और अनेक प्रकार के छल-कपट करने वाले लोगों की अच्छी तरह पहचान रखनी चाहिए। दिवालियों का ठाट-बाट और वैभव बहुत अधिक दिखाई पड़ता है। पर, वह सब धोखे की छाया होती है और आगे चलकर उनकी खूब फजीहत होती है।

इसी प्रकार बिना विश्वास के जो ज्ञान प्राप्त किया जाता

है, उससे समाधान नहीं होता। इस विषय में केवल सन्देह करने के कारण ही बहुत से लोगों का अहित हुआ है। यन्त्र-मन्त्र का उपदेश देकर अज्ञानी लोग उसी प्रकार फंसाये जाते हैं, जिस प्रकार अयोग्य वैद्य रोगी को मार डालते हैं। यदि अनाड़ी वैद्य के कारण किसी के प्राण चले जायें, तो इसमें दूसरा कोई क्या कर सकता है। जो मनुष्य दुःख के कारण अन्दर ही अन्दर छीजता चला जाता हो और वैद्य को अपनी दशा बतलाने में शर्माता हो, उस पर आत्महत्या का दोष मढ़ा जाना ही शोभा देता है। स्वयं अज्ञानी होकर किसी दूसरे ज्ञानी का अभिमान करना, जान-बूझकर डूबना है। आप ही सोचें कि इसमें हानि किसकी है; उस ज्ञाता की या अभिमान करने वाले अज्ञानी की? यदि स्वयं ही अंतर्चेतना में यह विश्वास हो जाये कि हमारे पाप कट गये और जन्म-मरण की यातना का अन्त हो गया, तभी समझना चाहिए कि हमारा कल्याण हो गया है।

जब आदमी ईश्वर को और स्वयं अपने आपको पहचान ले और समझ ले कि मैं आत्म-साक्षात्कार कर चुका, तभी उसका कल्याण होता है। जब पता चल जाये कि यह ब्रह्मांड किसने बनाया, किस चीज से बनाया और उसका मुख्य कर्ता-धर्ता कौन है, तभी कल्याण होता है। सन्देह बना रहने पर परमार्थ-संबंधी किये हुए सभी काम व्यर्थ हो जाते हैं और विश्वास के बिना मनुष्य संशय में डूब जाता है। यही परमार्थ का रहस्य है; और यदि कोई इस सम्बन्ध में झूठ बोले, तो वह अधम है। और जो इस बात को झूठ समझता हो, उसे परम अधम समझना चाहिए। यहाँ आकर बातों की सीमा समाप्त हो जाती है अर्थात् इससे अधिक कुछ कहा नहीं जा सकता। अज्ञानी को परमात्मा का पता नहीं चलता। हे परमात्मा, तू ही जानता है कि इसमें तनिक भी असत्य नहीं है। मेरी उपासना का महत्व इसी में है कि ज्ञान-सम्बन्धी सब बातें बिल्कुल ठीक-ठीक बतलाई जाएं, मिथ्या कहने से प्रभु पर दोष लगता है। इसलिए मैंने बिल्कुल सच ही कहा है। पहले कर्ता को पहचानना चाहिए और माया की उत्पत्ति का कारण ढूँढ़ना चाहिए। साधु-साधकों को सावधान होकर ये बातें विचार कर हृदयंगम करनी चाहिए। जहाँ सूक्ष्म निरूपण की आवश्यकता होती है, वहाँ कही हुई बात ही फिर से इसलिए कहनी पड़ती है, जिससे श्रोताओं की समझ में अच्छी तरह आ जाये। प्रतीति की रक्षा करने में रूढ़ि या परिपाटी उड़ जाती है। इसीलिए इतना बखेड़ा करना पड़ता है, जिसमें रूढ़ि की भी रक्षा हो और श्रोताओं के मन में प्रतीति भी उत्पन्न हो। इसीलिये अनेक उदाहरण देकर बातों को समझाया जाता है। ■

चार महावाक्य

वेदांत में वर्णित चार महावाक्य मानव जीवन के परम सत्य को उद्घाटित करने वाले दिव्य सूत्र माने जाते हैं। ये वाक्य अलग-अलग उपनिषदों- ऐतरेय, बृहदारण्यक, छांदोग्य और माण्डूक्य उपनिषद से लिए गए हैं। इन्हें महावाक्य इसलिए कहा गया है, क्योंकि ये केवल दार्शनिक कथन नहीं, बल्कि आत्मबोध के मार्गदर्शक हैं। ये हमें बाहरी खोज से हटाकर भीतर की यात्रा पर ले जाते हैं।

पहला महावाक्य है- “प्रज्ञानं ब्रह्म” ऐतरेय उपनिषद। इसका अर्थ है- चेतना ही ब्रह्म है। ब्रह्म कोई दूर स्थित सत्ता नहीं, बल्कि वही शुद्ध चैतन्य है जो हमारे भीतर साक्षी भाव से विद्यमान है। जब हम विचार, भावना और शरीर से परे अपने जागरूक अस्तित्व को पहचानते हैं, तब इस सत्य का अनुभव होता है।

दूसरा महावाक्य है- “अहं ब्रह्मास्मि” बृहदारण्यक उपनिषद। यह आत्मसाक्षात्कार का उद्घोष है। साधक जब समझ लेता है कि उसका वास्तविक स्वरूप नश्वर शरीर या चंचल मन नहीं, बल्कि शाश्वत चेतना है, तब वह अनुभव करता है कि ‘मैं ही ब्रह्म हूँ।’ यह अहंकार की अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि उसके विलय की अवस्था है।

तीसरा महावाक्य- “तत्त्वमसि” छांदोग्य उपनिषद। गुरु का शिष्य से कथन है कि “तू वही है।” अर्थात् जिस परम सत्य की खोज बाहर की जाती है, वह स्वयं के भीतर ही विद्यमान है।

चौथा महावाक्य- “अयमात्मा ब्रह्म” माण्डूक्य उपनिषद। यह बताता है कि यह आत्मा ही ब्रह्म है। जीव और ब्रह्म में कोई द्वैत नहीं, जैसे तरंग और सागर अलग नहीं होते। इन चारों महावाक्यों का आधार अद्वैत है। साधना के माध्यम से जब इन्हें जीवन में उतारा जाता है, तब भय, द्वेष और अज्ञान मिटने लगते हैं। यही ज्ञान अंततः शांति, प्रेम और मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करता है। इन्हें तत्त्वतः बोध प्राप्त करने के लिए ब्रह्मनिष्ठ सद्गुरु का आश्रय लेना पड़ता है। ■

एक बार भगवान बुद्ध भिक्षा मुंह नहीं मोड़ता है। वह मुझे सीधा शांति धाम के लिए एक किसान के यहां पहुंचे। तक ले जाता है। इस प्रकार मैं अमृत की खेती तथागत को भिक्षा के लिए आया देखकर करता हूं। भगवान बुद्ध का ज्ञानयुक्त उपदेश किसान उपेक्षा से बोला- श्रमण, मैं हल जोतता हूं और तब खाता हूं। तुम्हें भी हल जोतना और बीज बोना चाहिए और तब भोजन खाना चाहिए। बुद्ध ने कहा- महाराज! मैं भी खेती ही करता हूं...।

इस पर किसान को जिज्ञासा हुई और वह बोला- मैं न तो तुम्हारे पास हल देखता हूं, न बैल और ना ही खेती का स्थल। तब, आप कैसे कहते हैं कि आप भी खेती ही करते हो! आप, कृपया अपनी खेती के संबंध में विस्तार से समझाइए। बुद्ध ने कहा- महाराज! मेरे पास श्रद्धा का बीज, तपस्या रूपी वर्षा और प्रजा रूपी जोत और हल है, पापभीरुता का दंड है, विचार-रूपी रस्सी है, स्मृति और जागरूकता रूपी हल की फाल और पेनी है।

आगे महात्मा बुद्ध ने कहा- मैं वचन और कर्म में संयत रहता हूं। मैं अपनी इस खेती को बेकार विकाररूपी घास से मुक्त रखता हूं और आनंद की फसल काट लेने तक प्रयत्नशील रहने वाला हूं। अप्रमाद मेरा बैल है, जो बाधाएं देखकर भी पीछे

अमृत की खेती

श्रवण कर वह किसान उनके समक्ष नतमस्तक हो गया। इस प्रसंग का

यही आशय है कि हरएक मनुष्य अपने जीवन में खेती करता है; वह जैसा बीज बोता है, उसी का फल प्राप्त करता है। इसलिए जीवन में ज्ञान और भक्ति का बीज बोना चाहिए, तभी हमारे जीवन में शांतिरूपी फल सुलभ होगा। ■

ताहि तें आयो सरन सबेरें

ताहि तें आयो सरन सबेरें।

ग्यान बिराग भगति साधन कछु, सपनेहुं नाथ न मेरें।।टेक।।

लोभ मोह मद काम क्रोध रिपु, फिरत रैन दिन घेरें।

तिनहिं मिले मन भयो कुपथ रत, फिरै तिहारेहि फेरें।।

ताहि तें आयो सरन सबेरें।। 1।।

दोष निलय यह बिषय सोक प्रद, कहत संत श्रुति टेरें।

जानत हूँ अनुराग तहाँ अति सो, हरि तुम्हरेहि प्रेरें।।

ताहि तें आयो सरन सबेरें।। 2।।

बिष पियूष सम करहु अग्नि हिम, तारि सकहु बिनु बेरें।

तुम सम ईस कृपालु परम हित, पुनि न पाइहौं हेरें।।

ताहि तें आयो सरन सबेरें।। 3।।

यह जिय जानि रहौं सब तजि, रघुबीर भरोसे तेरें।

तुलसिदास यह बिपति बागुरौ, तुम्हहिं सों बने निबेरें।।

ताहि तें आयो सरन सबेरें।। 4।।

माताश्री राजेश्वरी जयंती “मातृ शक्ति दिवस” के सुअवसर पर

विशाल जनकल्याण समारोह में गूंजी

“भाव का भूखा हूं मैं और भाव ही एक सार है” की स्वर लहरियां

ज्ञान को जानें, भजन करें और अपने जीवन को धन्य बनायें! -माताश्री मंगला जी

श्री हंसलोक आश्रम, भाटी, नई दिल्ली। परमाराध्या माताश्री राजेश्वरी देवी जी की पावन जयंती “मातृ शक्ति दिवस” के सुअवसर पर परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं माताश्री मंगला जी के पावन सानिध्य में 4 व 5 अप्रैल, 2026 को श्री हंसलोक आश्रम, भाटी नई दिल्ली में द्वि-दिवसीय विशाल

मीडिया, बल्क एसएमएस मैसेज, यूट्यूब, फेसबुक, वाट्सएप, डिजीटल प्लेटफार्म, समाचार पत्रों, हॉर्डिंग, पंफलेट तथा निमंत्रण पत्र आदि के माध्यम से प्रत्येक नगर, कस्बा और गांव के हर एक व्यक्ति तक जनकल्याण समारोह में पधारने की सूचना एवं निमंत्रण पहुंचाया गया। यही कारण

था।

चूंकि, यह वर्ष श्री हंस जयंती का 125वां वर्ष घोषित किया गया है, इसलिए योगिराज श्री हंस जी महाराज की जीवन यात्रा की एक चित्र प्रदर्शनी “श्री हंस दर्शन दीर्घा” हाल बनाया गया था जिसमें उनके साधनाकाल से लेकर अंतर्धान तक के चयनित चित्र



श्री हंसलोक आश्रम, भाटी, नई दिल्ली में मातृ शक्ति दिवस के सुअवसर पर आयोजित जनकल्याण समारोह को सम्बोधित करते हुए परमाराध्या माताश्री मंगला जी एवं साथ में विराजमान परमपूज्य श्री भोले जी महाराज

जनकल्याण समारोह श्रद्धा-भक्ति के साथ संपन्न हुआ। इस समारोह की तैयारियां एक महीना पहले से ही शुरू हो गई थीं। संपूर्ण भारत व नेपाल राज्य में फैले संस्था के महात्मा/बाईगण, प्रचारक तथा कार्यकर्ताओं के माध्यम से समारोह की सूचना जन-जन तक पहुंचाई गई। इसके अलावा सोशल

था कि बेमौसम बरसात होने, खेतों में पकी फसल खड़ी होने, बच्चों के परीक्षाएं होने तथा पांच राज्यों में चुनाव प्रचार का जोर होने के बावजूद 8 हजार से अधिक प्रेमीभक्तों, श्रद्धालुओं और जिज्ञासुओं ने इस समारोह में भाग लिया। जो भी समारोह में शामिल हुआ, वह बहुत ही खुश और मस्ती में

लगाए गए थे।

माताश्री राजेश्वरी देवी जी की जयंती के उपलक्ष्य में आयोजित जनकल्याण समारोह के लिए सुंदर पंडाल और तीन मंचों का निर्माण किया गया था, जिन्हें सुंदर पत्र, पुष्प, वस्त्र और बैनर से सजाया गया था। मुख्य मंच पर योगिराज श्री हंस जी

महाराज एवं माताश्री राजेश्वरीदेवी की सुन्दर छवि प्रतिस्थापित की गयी थी और महात्मा/बाईगण के मंच पर श्री गणेश जी तथा संगीत मंच पर माता सरस्वती की सुन्दर छवि प्रतिष्ठित की गयी थी। अतिथियों एवं प्रेमीभक्तों तथा श्रद्धालुओं को बैठने के लिए सुखद सोफा व कुर्सियों की व्यवस्था की गयी थी। साथ ही उनके लिए सुबह, दोपहर तथा रात्रि के लिए स्वादिष्ट व्यंजनों

आवास, शौच-स्नान आदि संचालित किए जाने शुरू हो गए थे। 3 अप्रैल की प्रातःकाल से ही प्रेमीभक्तों के समूह आश्रम में प्रवेश करने लगे थे और शाम होते-होते समारोह परिसर में हर ओर उनकी चहल-पहल नजर आने लगी थी। सायंकाल श्री हंसलोक सेवक/सेविकाओं एवं जूनियर सेवकों की एक मार्गदर्शक बैठक आयोजित की गयी जिसे सेवक संगठन के पदाधिकारियों

समारोह का शुभारंभ हुआ। तत्पश्चात श्री मंगल जी ने उपस्थित जनसमुदाय को संबोधित करते हुए कहा कि माताश्री राजेश्वरी देवी अपने समय की अद्वितीय विभूति थीं, जो संपूर्ण जीवन मानव कल्याण में संलग्न रहीं। इसके बाद महात्मा श्री शिवकृपानंद जी ने अपने संबोधन में कहा कि हम आज श्री माता जी का पुनीत स्मरण कर रहे हैं, जो हमें उनके द्वारा दी गयी सीख,



श्री हंसलोक आश्रम, भाटी, नई दिल्ली में मातृ शक्ति दिवस के सुअवसर पर आयोजित जनकल्याण समारोह में प्रवचन श्रवण करते हुए श्रद्धालुगण

से युक्त भंडारा, आवास, शौच-स्नान, चिकित्सा, सुरक्षा आदि की भी समुचित व्यवस्था की गयी थी। श्री हंसलोक आश्रम के प्रवेश द्वारों को वस्त्र, पुष्प और सुंदर स्वागत बैनर से सजाया गया था। समस्त तैयारियां 2 अप्रैल को ही पूर्ण कर ली गयी थीं। प्रवेश पत्र कार्यालय, श्री हंसलोक सेवक सेवा शिविर, स्वागत कक्ष, सुरक्षा, भण्डारा,

के साथ-साथ परमाराध्या माताश्री मंगला जी ने भी संबोधित कर सेवक/सेविकाओं को सेवा के महत्व को समझाया।

प्रथम दिवस 4 अप्रैल को सायंकाल ठीक 6 बजे से मंगलाचरण, प्रार्थना एवं श्री सूरज सनवाल के द्वारा गाए गए “करूं वंदना में तेरी, जग के रचाने वाले” भजन के साथ जनकल्याण

शिक्षाओं और उपदेशों की याद दिला रहे हैं। **“पायो जी मैंने राम रतन धन पायो”** भजन की प्रस्तुति कुमारी रश्मि द्वारा की गयी। इसके बाद श्री सत्यवान जी ने माता की स्तुति करते हुए **“माता तेरे चरणों की, गर धूल जो मिल जाये”** प्रार्थना गायी। इस बीच दिव्य विभूतियों का मंच पर पदार्पण हुआ, तो समस्त पंडाल उनकी जय-जयकार की

समवेत उच्च ध्वनि से गुंजायमान हो उठा। सभी को इसी घड़ी की प्रतीक्षा थी जो श्री महाराज जी और माता जी के मंच पर विराजमान होते ही पूर्ण हो गयी। दिव्य विभूतियों का दर्शन और सानिध्य प्राप्त कर प्रेमीभक्त समुदाय अपने आपको धन्य मान रहा था।

तत्पश्चात परमपूज्य श्री भोले जी महाराज ने अपनी मधुर वाणी में माताश्री राजेश्वरी देवी जी के प्रिय

थे, तो ऐसा लग रहा था जैसे जगत जननी श्री माता जी का विराट स्वरूप वहां प्रत्यक्ष हो गया हो। तत्पश्चात करुणामयी माताश्री मंगला जी का मंगलमय प्रवचन आरंभ हुआ। विशाल जनसमुदाय को सम्बोधित करते हुए माता जी ने कहा कि हमें केवल आज ही नहीं हर क्षण और पल श्री माता जी का स्मरण रहता है। हम उन्हीं की कृपा से उनका आश्रय ग्रहण कर

होता है, वह सदैव सभी के कल्याण के प्रभु-परमात्मा और सद्गुरु महाराज से दुआएं मांगती रहती है। साथ ही वह इतनी शक्तिशाली भी होती है जो किसी संकट, संघर्ष और विछोह को अपनी ताकत से परास्त कर सकती है। श्री माता जी ने भी अपने जीवन में इन सभी संकटों और संघर्षों का सामना किया तथा अपने संकल्प, परिश्रम और ज्ञान की शक्ति से उसका डटकर



श्री हंसलोक आश्रम, भाटी, नई दिल्ली में मातृ शक्ति दिवस के सुअवसर पर आयोजित जनकल्याण समारोह में मंचस्थ महात्मागण

भजन “अपनी हस्ती जो तेरे चरणों में मिटा देते हैं” तथा “भाव का भूखा हूं मैं और भाव ही एक सार है” गाये, जिसमें सभी प्रेमीभक्तों ने भी पूरी मस्ती के साथ उनका साथ निभाया। इन भजनों के माध्यम से महाराज जी ने माताश्री राजेश्वरीदेवी जी का स्मरण कराया। जब सभी श्री महाराज जी के स्वर के साथ अपना स्वर मिला रहे

अध्यात्म ज्ञान प्रचार और मानव सेवा के अनेकानेक कार्यों को साकार रूप प्रदान कर पा रहे हैं। श्री माता जी परम दयालु, अध्यात्मवादी, संवेदनशील और निरंतर सद्मार्ग का अनुसरण करने वाली तथा सभी को सत्य, धर्म और मर्यादा के पथ पर निरंतर अग्रसर करने वाली महान विभूति थीं। उन्होंने कहा कि मां का हृदय बहुत संवेदनशील

सामना कर अध्यात्म ज्ञान प्रचार-प्रसार को व्यापकता प्रदान करने के साथ उसे संगठित, सक्रिय और व्यवस्थित किया। इस तरह काफी देर तक माताश्री मंगला जी परमाराध्या माताश्री राजेश्वरी देवी जी के जीवन व दर्शन पर प्रकाश डालती रहीं। श्री सत्यवान जी द्वारा “नैया लगा दो भव पार, मेरे सतगुरु जी” भजन गाया। इन सभी

भजनों में कुमारी काव्या वर्मा, गरिमा सनवाल, कसिस, नैना और मोनिका दुबे ने साथ निभाया। इस प्रकार प्रथम दिवस का जनकल्याण समारोह संपन्न हुआ।

समारोह के द्वितीय दिवस प्रातःकाल से ही आत्म-जिज्ञासुओं की लंबी कतार ज्ञानोपदेश प्राप्त करने के लिए लग गई। महात्मा/बाईगण ने

कतारें लग गयीं। माता जी एवं महाराज जी ने कृपा कर सभी को अपने दर्शन देकर कृतार्थ किया। इस तरह सभी को दिव्यविभूतियों के दिव्य दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ। दर्शन के समय भजन गायक भक्तों द्वारा गाई जा रही प्रार्थना, स्तुति एवं मनुहार के भजनों की भक्तिमय मधुर स्वरलहरियां पंडाल में निरंतर गूंजती रहीं; सभी प्रेमीभक्त

आरंभ हुआ। श्री सूरज सनवाल के स्वर में **“सफल हुआ है उन्हीं का जीवन, जो तेरी शरण में आ चुके हैं”** भजन के साथ हुआ। इसके बाद द हंस फाउण्डेशन के माध्यम से देशभर में मानव सेवा के लिए चलाये जा रहे अनेकानेक सेवा प्रकल्पों पर आधारित संक्षिप्त वीडियो डोक्यूमेंटरी चलाई गयी। तत्पश्चात श्री सत्यवान जी ने **“तेरी हीरे**



श्री हंसलोक आश्रम, भाटी, नई दिल्ली में मातृ शक्ति दिवस के सुअवसर पर आयोजित जनकल्याण समारोह में भजन प्रस्तुत करते गायक कलाकार

उनमें से एक-एक की जिज्ञासा परखने के बाद चयनित सैकड़ों जिज्ञासुओं को श्री सद्गुरु महाराज जी की आज्ञा से आत्मज्ञान का व्यावहारिक बोध कराया। इसके बाद प्रातः 10 बजे से परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं माताश्री मंगला जी के दर्शन के लिए पंडाल में श्रद्धाभक्ति से भरपूर प्रेमीभक्तों एवं श्रद्धालुओं की लंबी-लंबी

भक्तिभाव से भरपूर होकर प्रेमरस से सराबोर नजर आ रहे थे। कोई नाच रहा था, कोई गा रहा था तो कोई मस्ती में अपने तन-मन की सुध-बुध भूलकर करतल ध्वनि कर झूम रहा था। पंडाल में एक अद्वितीय आध्यात्मिक वातावरण बना हुआ था।

सायंकाल ठीक समय पर द्वितीय दिवस के जनकल्याण समारोह का

जैसी स्वांसा, बातों में बीती जायें” चैतावनी का भजन तथा कुमारी रश्मि ने **“गिरधारी रे जीने का सहारा तेरा नाम रे”** भजन गाया जिसमें सहयोगी बाल कलाकारों ने साथ निभाया। तत्पश्चात सुश्री श्वेता दीदी का सारगर्भित प्रवचन हुआ। उन्होंने समझाया कि यह प्रभु प्रदत्त जीवन अपने क्रम से बाल, किशोर, युवा, प्रौढ़, वृद्ध होता है और

एक दिन जहां से और जिन तत्वों से उत्पन्न हुआ है, उन्हीं में समा जाता है। यह एक प्राकृतिक घटना है जिसके लिए दुःख मनाने या सुख मनाने से कोई लाभ नहीं है। इसलिए जीवन को प्रभु भक्ति में लगायें, ज्ञान को समझें और माया-मोह से अपने आपको दूर रखें। उन्होंने कहा कि श्री महाराज जी और श्री माता जी ने बड़ी कठिनाई से अध्यात्म ज्ञान का

बाद कुमारी रश्मि ने **“मन लागो मेरो यार फकीरी में”** भजन गाया।

पंडाल पूरी तरह से खचाखच भर चुका था, कहीं भी कोई स्थान शेष नहीं रहा था। उपस्थित प्रेमीभक्तों की हार्दिक पुकार को देखते हुए माताश्री मंगला जी ने अपने प्रवचन का शुभारंभ किया। संपूर्ण पंडाल जय-जयकार की ध्वनि से गूंज उठा। श्री माता जी ने कहा

समाया।” अर्थात् उसी एक का सुमिरण करो जो जल, थल सबमें समाया हुआ। यह मनुष्य शरीर उसी प्रभु के नाम का सुमिरण करने के लिए मिला है; लेकिन हम संसार की चकाचौंध में उसे भूल जाते हैं। इसीलिए नानकदेव जी ने कहा- **“लख चौरासी भरमदियां, मानुष जनम पायो, कह नानक नाम संभाल सो दिन नेड़े आयो।”** यह



श्री हंसलोक आश्रम, भाटी, नई दिल्ली में मातृ शक्ति दिवस के सुअवसर पर आयोजित जनकल्याण समारोह में पधारे श्रद्धालु भंडारे में भोजन प्रसाद ग्रहण करते हुए

प्रचार किया। जब हमारे पास ज्ञान का चश्मा होता है, तो सब स्पष्ट और सत्य-सत्य दिखाई देता है। समाज में बहुत से गुरु हैं, बहुत से धर्म हैं, लेकिन अध्यात्म का जो ज्ञान है, वह कभी बदलता नहीं है। हम बाहर से भले ही अलग-अलग दिखाई दे रहे हैं, लेकिन जब ज्ञान की दृष्टि से देखेंगे, तो पता चलेगा कि अंदर से हम सब तत्त्वतः एक ही हैं। इसके

कि महापुरुषों ने ज्ञान को धारण किया और मानवमात्र को भी उस अध्यात्म ज्ञान का प्रत्यक्ष बोध कराया। उन्होंने कहा कि अध्यात्म तत्व सर्वत्र व्याप्त है। इसी तरह प्रभु का नाम भी सभी के प्राणों में समाया हुआ है जिसका सुमिरण करने से ही जीव का कल्याण होता है। गुरु नानकदेव जी की वाणी है- **“एको सिमिरो नानका जल थल रह्यो**

मनुष्य जीवन बहुत अनमोल है। यदि इस देव दुर्लभ मनुष्य तन को पाकर भी प्रभु के नाम का सुमिरण नहीं किया तो फिर से चौरासी लाख योनियों में भटकना पड़ेगा। इसलिए सांसारिक कर्तव्यों का निर्वहन करते हुए प्रभु भक्ति और सुमिरण में भी समय लगाओ। समय के सद्गुरु की खोज कर उस अध्यात्म ज्ञान को जानो, भजन करो,

सेवा करो ताकि मानव जीवन सार्थक बने। यही शिक्षा जगत जननी माताश्री राजेश्वरी देवी जी की रही। वे हमेशा कहती थीं कि **“जागो रे जिन जागना, अब जागन की वारि। फिर क्या जागे**

खुल गये भाग्य हमारे गुरु जी” गाया गया। तत्पश्चात श्री सद्गुरुदेव महाराज जी एवं जगतजननी श्री माता जी की आरती के साथ ही विशाल जनकल्याण समारोह का समापन हुआ।

में जो भी आया, वह प्रभावित हुए बिना नहीं रहा। सभी श्रद्धालुओं ने इस बात की सराहना की कि इतना विशाल कार्यक्रम कितनी शांति, स्वच्छता और सुव्यवस्था के साथ आयोजित किया जा



श्री हंसलोक आश्रम, भाटी, नई दिल्ली में मातृ शक्ति दिवस के सुअवसर पर आयोजित जनकल्याण समारोह के समापन पर श्री सद्गुरुदेव जी महाराज की मंगल आरती गाते हुए प्रेमी भक्तगण

नानका, जब सोवे पांव पसारि।”

इसलिए मृत्यु आने से पहले ही अपनी आत्मा में जाग जाना चाहिए, अन्यथा मृत्यु के बाद तो फिर चाहने से भी कुछ नहीं होगा। इसलिए ज्ञान को जानें, भजन करें और अपने मानव जीवन को धन्य करें। इस प्रकार काफी देर तक श्री माता जी का मंगलमय प्रवचन चलता रहा। संपूर्ण पंडाल में निस्तब्धता और शांति का साम्राज्य था। सभी प्रवचन सुनते-सुनते समाधिस्थ जैसे हो गये थे। श्री माता जी के प्रवचन के बाद एक भजन **“हो गये दर्शन तुम्हारे गुरु जी,**

इसप्रकार यह दो दिवसीय विशाल जनकल्याण समारोह अनेक अद्वितीय स्मृतियों की छाप हृदय पटल पर छोड़ गया। श्री हंसलोक सेवक, सेविकाओं, जूनियर सेवकों, कार्यकर्ताओं तथा आश्रम सेवकों ने दिन-रात अथक परिश्रम कर समारोह को सफल बनाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। पानी, बिजली, भण्डारा, चिकित्सा, सुरक्षा, आवास और वाहन व्यवस्था दिन-रात सुलभ रही। सभी ने निरालस्य होकर अपनी तन-मन की सेवाएं समर्पित कीं। इस जनकल्याण समारोह

रहा है जिसमें कहीं किसी को किसी भी प्रकार की असुविधा नहीं हो रही है। यही कारण है कि इस समारोह की व्यवस्था और अनुशासन की सराहना किए बिना नहीं रहा जा रहा था, वहीं जगतजननी श्री माता जी के जीवन-दर्शन को जाने बिना भी कोई नहीं रहा। सभी का यही कहना था कि ऐसी महान विभूति जिन्होंने अनेकानेक संकटों, संघर्षों, असुविधाओं और संसाधनों के अभाव में भी देश-विदेश में अध्यात्म ज्ञान की अलख जगाई, यह उनकी महानता का ही परिचायक है। ■

-: पत्रिका संबंधी सूचना :-

सभी आदरणीय महात्मा/बाईगण एवं प्रचारकों से निवेदन है कि आप अपने क्षेत्र में अध्यात्म-ज्ञान के प्रचार-प्रसार हेतु **“हंसलोक संदेश”** पत्रिका को अधिक से अधिक प्रेमी-भक्तों एवं अध्यात्मज्ञान पिपासुओं तक पहुँचायें। पत्रिका के माध्यम से आपको हर माह परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं डॉ. माताश्री मंगला जी के देशभर में आयोजित जनकल्याण समारोहों में दिए गए प्रवचनों को पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त होगा। साथ ही समारोहों के सुन्दर चित्र और विस्तृत विवरण भी पढ़ने को मिलेगा। इसके अलावा संस्थागत आध्यात्मिक, सांस्कृतिक एवं जनकल्याण से संबंधित गतिविधियों की सूचना व समाचार भी मिलेंगे। इसलिए प्रत्येक प्रेमी परिवार में नियमित रूप से पत्रिका अवश्य मंगाई जाए।

डाक से पत्रिका की सुलभ प्राप्ति के लिए गाँव/क्षेत्र के सभी प्रेमी भक्त एक साथ किसी एक प्रेमी-भक्त के नाम व पते पर पत्रिकाएं बंडल रूप में मंगवा सकते हैं।

नोट:- (1) हंसलोक संदेश पत्रिका की रसीद काटते समय रसीद पर पाठक का पैन नम्बर, आधार नम्बर तथा मोबाइल नम्बर अवश्य लिखें।

(2) पत्रिका की एक रसीद (पर्ची) 100/- रुपये से अधिक की न काटी जाए।

(3) पत्रिका के लिए मनीआर्डर भेजते समय अपना पैन नम्बर, आधार नम्बर और मोबाइल नम्बर अवश्य लिखें।

(4) यदि आप एक से अधिक पत्रिकाएं बंडल के रूप में मंगाना चाहते हैं तो मो.नं-9038675826 पर संपर्क कर पूरी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

एक प्रति मूल्य- रु.10/-

हंसलोक संदेश पत्रिका मंगाने का पता:-

कार्यालय - हंसलोक संदेश

श्री हंसलोक आश्रम, बी-18, भाटी माइंस रोड, भाटी, छतरपुर,

नई दिल्ली-110074 संपर्क सूत्र- 8860671326

विशेष:- पत्रिका संबंधी अपने अमूल्य सुझावों से हमें अवगत कराते रहें। आपके सुझाव हमारे लिए मार्गदर्शन का कार्य करेंगे। -सम्पादक

मई, 2026 के पर्व-त्योहार

- 1 मई शुक्रवार- अंतर्राष्ट्रीय श्रमिक दिवस □ 1 मई शुक्रवार- वैशाख पूर्णिमा (बुद्ध पूर्णिमा)
- 10 मई रविवार- मातृ दिवस
- 13 मई बुधवार- अपरा एकादशी □ 16 मई शनिवार- ज्येष्ठ अमावस्या, वट सावित्री व्रत
- 25 मई सोमवार- गंगा दशहरा □ 27 मई बुधवार- पदमिना एकादशी
- 31 मई रविवार- ज्येष्ठ पूर्णिमा □ 31 मई रविवार- विश्व तंबाकू निषेध दिवस



जनकल्याण समारोह - नई दिल्ली, 4 व 5 अप्रैल, 2026



नई दिल्ली। हंसलोक आश्रम में हंसज्योति - ए यूनिट ऑफ हंस कल्चरल सेंटर के तत्वावधान में दिनांक 4 एवं 5 अप्रैल, 2026 को **माता श्री राजेश्वरी देवी जी** की पावन जयंती **"जनकल्याण समारोह"** के रूप में बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाई गई। इस अवसर पर देश-विदेश से पधारे हजारों श्रद्धालु एवं प्रेमीभक्तों ने श्री भोले जी महाराज, माता श्री मंगला जी एवं संत-महात्माओं के प्रेरणादायक प्रवचनों का श्रवण कर आत्मिक लाभ प्राप्त किया। अपने उद्बोधन में माता श्री मंगला जी ने मानव जीवन में कर्म के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि जब व्यक्ति अध्यात्म के मार्ग से जुड़कर भजन-साधना में मन लगाता है, तब उसके जीवन में सुख, शांति और समृद्धि का संचार होता है। उन्होंने आगे कहा कि ऐसा व्यक्ति समाज में दूसरों के लिए प्रेरणास्रोत बनता है। अंत में उन्होंने सभी से आह्वान किया कि इस आध्यात्मिक ज्ञान का अधिक से अधिक प्रचार-प्रसार करें, ताकि समाज में सकारात्मकता और मानवता का विकास हो सके।

बुद्ध पूर्णिमा की हार्दिक शुभकामनाएं

भगवान बुद्ध अपने समय के ऐसे महान महापुरुष थे, जिन्होंने सफल और संतुलित जीवन के लिए मध्यम मार्ग को अपनाया और अपने अनुयायियों को भी इसी मार्ग पर चलने का उपदेश दिया। उनके अनुसार मनुष्य को न तो अत्यधिक कठोर तपस्या करनी चाहिए और न ही भौतिक सुखों में अत्यधिक लिप्त होना चाहिए, बल्कि दोनों के बीच संतुलन बनाए रखना ही सच्चा मार्ग है। वे पूर्णतः अहिंसा के पक्षधर थे और पशु बलि सहित किसी भी प्रकार की हिंसा के घोर विरोधी थे। उनके जीवन का मूलमंत्र था— **"अप्प दीपो भव"**, अर्थात् स्वयं अपने दीपक बनो। उनका मानना था कि संत-महापुरुष केवल मार्गदर्शन कर सकते हैं, परंतु साधना के माध्यम से व्यक्ति को स्वयं ही अपने जीवन को प्रकाशित करना होता है। आइए, बुद्ध पूर्णिमा के इस पावन अवसर पर हम सभी भगवान बुद्ध की शिक्षाओं को अपने जीवन में आत्मसात करें और आत्मज्ञान (बोधिसत्त्व) की प्राप्ति की दिशा में अग्रसर हों। यही मार्ग हमें दुःखों से मुक्ति दिलाकर सच्चे सुख और शांति की ओर ले जाता है। - परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं माता श्री मंगला जी



आध्यात्मिक सत्संग-भजन कार्यक्रम के वीडियो **YouTube** पर उपलब्ध हैं। **YouTube** पर **HANSLOKTV** चैनल को अवश्य सब्सक्राइब करें और श्री भोले जी महाराज व माता श्री मंगला जी तथा संत-महात्माओं के सत्संग-भजन से आत्मलाभ प्राप्त करें।



MOB: 8800291788/ 8800291288



/hanslok